आचार्यकुल समाचार

वर्ष : 4 | अक्तूबर से दिसम्बर 2019 | अंक 13 | मूल्य : 25 रूपये | त्रैमासिक समाचार पत्र

भारत रत्न आचार्य संत विनोबा भावे

स्मारिका

125वीं जयंती पर विशेष

आचार्यकुल समाचार

वर्ष : 4 अक्तूबर से दिसम्बर 2019 अंक 13

अध्यक्ष
के. के. शारदा
मो. 9872316072

सचिव
डॉ. देवराज त्यागी
मो. 9478522333

मुख्य संपादक
प्रेम विज
मो. 9872009926

संपादक मंडल
डॉ. प्रज्ञा शारदा
पापिया चक्रवर्ती

प्रैस फोटोग्राफर
तेजिंदर ठाकुर

सहयोग राशि
एक प्रति : 25 रुपये
पांच वर्षों का : 500 रुपये

शुल्क
शुल्क नगद प्राप्त किया जायेगा,
जिसकी रसीद दी जाएगी।

रचना व प्रतिक्रिया भेजने का पता
गांधी स्मारक भवन,
सैक्टर 16–ए, चण्डीगढ़
ईमेल : acharyakul.chd@gmail.com
वेबसाईट : www.acharyakul.org

मुद्रक
बंसल ग्राफिक्स
प्लॉट नं. 136–140/28, औद्योगिक क्षेत्र,
फेस–1, चण्डीगढ़

पत्रिका में मुद्रित लेख, लेखकों के अपने विचार हैं। इससे संपादक मण्डल का कोई संबंध नहीं है। पत्रिका संबंधी किसी भी विवाद का निपटारा चण्डीगढ़ कोर्ट में किया जाएगा।

प्रकाशक व मुद्रक, स्वामित्व :
आचार्यकुल समाचार के प्रकाशक
एवं स्वामित्व –
श्री. के. के. शारदा, मकान नं. 401,
सैक्टर 43–ए, चण्डीगढ़–160022

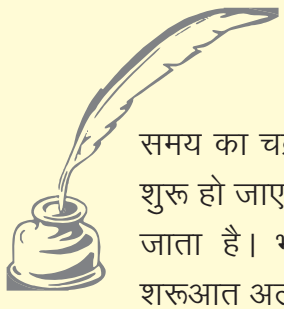

संपादकीय

समय का चक्र चलता रहता है। दिसम्बर माह के पश्चात नव वर्ष शुरू हो जाएगा। पूरे विश्व में नया साल अलग–अलग दिन मनाया जाता है। भारत में भी अलग–अलग क्षेत्रों में नए साल की शरूआत अलग–अलग समय होती है। लेकिन अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार पहली जनवरी से नए साल की शुरूआत मानी जाती है। इसलिए इस दिन को पूरी दुनिया में नया साल शुरू होने के उपलक्ष्य में पर्व की तरह मनाया जाता है। नया साल आप सभी के लिए नयी उम्मीदें, नए सपने, नए लक्ष्य के साथ उत्साह और खुशियां लेकर आए। लोग इस दिन पार्टी का आयोजन भी करते हैं। लेकिन इस दिन को ईश्वर को याद कर शुरूआत करनी चाहिए।

गुरू तेग बहादुर सिखों के नवें गुरू हैं। उन्होंने कश्मीरी पंडितों तथा अन्य हिन्दुओं को बलपूर्वक मुसलमान बनाने का विरोध किया। इस्लाम स्वीकार न करने के कारण मुगल शासक औरंगज़ेब ने उनकी हत्या करवा दी थी। गुरू जी का बलिदान केवल धर्म पालन के लिए नहीं अपितु समस्त मानवीय सांस्कृतिक विरासत की खातिर था। धर्म के सत्य शाश्वत मूल्यों के लिए उनका बलि चढ़ जाना वस्तुतः सांस्कृतिक विरासत और इच्छित जीवन विधान के पक्ष में एक परम साहसिक अभियान था।

महर्षि वाल्मीकि की जंयती भी इसी समय के दौरान मनाई गई। महर्षि वाल्मीकि जी आदि कवि के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। वैसे तो वाल्मीकि जयंती पूरे भारत में उत्साह से मनाई जाती है। वे वैदिक काल के महान ऋषि बताए जाते हैं। धार्मिक ग्रंथ और पुराणों के अनुसार वाल्मीकि ने कठोर तप अनुष्ठान कर महर्षि का पद प्राप्त किया था। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार आदिकाव्य श्रीमद वाल्मीकि रामायण जगत का सर्वप्रथम काव्य था। महर्षि वाल्मीकि ने महाकाव्य रामायण की रचना संस्कृत भाषा में की थी।

क्रिसमस का त्योहार वैसे तो ईसाई धर्म से जुड़ा हुआ है किन्तु यह विश्व में हर जगह लगभग सभी धर्मों के लोगों द्वारा मनाया जाता है। ईसाई धर्म की स्थापना हजरत ईसा मसीह ने की थी। उन्होंने घृणा, ईर्ष्या, द्वेष और शत्रुता से मुक्त विश्व को अहिंसा, प्रेम और सहिष्णुता का संदेश दिया।

गांधी स्मारक निधि और आचार्यकुल चंडीगढ़ के विभिन्न कार्यक्रम होते रहते हैं। उनमें आप सभी का स्वागत है।

प्रेम विज

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आचार्यकुल, चण्डीगढ़ अब भारत सरकार के इन्कम टैक्स विभाग के US/80G के अन्तर्गत आयकर छूट के लिए मान्य है। अतः आपके द्वारा दिया गया सहयोग रूपी दान अथवा अनुदान इन्कम टैक्स में छूट के दायरे में आयेगा।

अध्यक्ष की कलम से

श्री गुरूनानक देव जी
550वीं जयंती

महात्मा गांधी एवं कस्तूरबा गांधी जी
150वीं जयंती

विनोबा भावे जी
125वीं जयंती

इस साल इन महान लोगों की जयंती दिवस मनाए गए। इसके अलावा और भी कई लोग जैसे भगत सिंह जी की 112वीं जयंती मनाई गई। यह सभी लोग हमारे भारत वर्ष ही नहीं अपितु पूरी दुनिया के लिए अपने कार्यों की मिसाल छोड़ कर गए। इन लोगों को हम सिर्फ इनकी जयंती एवं पुण्य तिथि पर ही न याद करें बल्कि इन्हें हर रोज़ याद रखें एवं इनके पदचिन्हों पर चलने का प्रयास करें यही इनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

पिछले 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती पर भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया ने उस दिन बापू को याद किया। राष्ट्र उन्हें नमन तो करता है लेकिन कुछ सिरफिरे लोग अभी भी उनके बारे में कई तरह की भ्रांतियाँ पैदा करने में लगे रहते हैं। या तो वो लोग गांधी को पूरी तरह समझ नहीं सके या समझना नहीं चाहते। मेरा ऐसे लोगों से विनम्र निवेदन है कि इस तरह की विभूतियों के बारे में अपनी सोच को बदलें। ये लोग अपने लिए नहीं बल्कि देश के लिए जीए। खासकर मरणोपरांत किसी के बारे में भी गलत बोलना शोभा नहीं देता।

हमारे राष्ट्रीय संत, भारत रत्न विनोबा भावे जी की 125वीं जयंती भी इसी साल मनाई जा रही है। विनोबा जी से जुड़ी हुई संस्थाओं के अलावा दूसरी कोई भी संस्था या सरकार मुझे नहीं लगता कि इस तरह के महान व्यक्तित्व को याद करती होगी या उनकी जयंती या पुण्य तिथि मनाती होगी। विनोबा जी ने हमेशा गरीब लोगों के लिए कार्य किया जैसे कि उन्होंने भूदान आंदोलन चलाते हुए लाखों एकड़ भूमि अमीर लोगों से लेकर गरीबों में बाँटी। उनके बाद किसी ने भी ऐसा कार्य नहीं किया। हजारों मील पद यात्रा करते समय उन्होंने डाकूओं का पहला आत्मसमर्पण भी करवाया था। लेकिन आज हम सब लोग इनके कार्यों को भुलाए बैठे हैं। हमें चाहिए कि ऐसे लोगों के नक्शे कदम पर चलें और अपने देश का मान बढ़ाए।

नव वर्ष की
शुभकामनाओं के साथ

के.के. शारदा

विनोबा के कार्य

डॉ. प्रज्ञा शारदा

1. सवेरे उठते ही बाबा विनोबा का पहला काम था– भगवान का नाम लेना। आश्रम में हों चाहे यात्रा में, सब जगह वे बिस्तर छोड़ते ही राम का नाम लेने लगते थे। कभी वे वेद के मंत्र बोलने लगते थे, कभी उपनिषद के मन्त्र। कभी गीता गाने लगते थे तो कभी कुछ और। प्रार्थना से ही विनोबा अपना रोज़ का काम शुरू करते थे। उनके अनुसार प्रार्थना में स्नान, भोजन व आराम जैसी तीन खूबियाँ हैं।

- नहाने से शरीर साफ होता है।
- प्रार्थना से मन साफ होता है।
- भोजन से शरीर मजबूत होता है।
- आराम करने से शरीर में उत्साह आता है।

विनोबा सवेरे ढ़ाई बजे ही उठ जाते थे। तब वे चरखा कातते थे। विनोबा ने तमाम धर्मों को याद करने के 36 नामों की एक माला बनाई थी। राम धुन भी होती थी और अंत में 11 व्रतों का पाठ किया जाता था। विनोबा का सारा काम राम भरोसे ही चलता था। उनका मानना था कि जो भी करता है, अच्छा या बुरा, सब राम ही करता है।

2. विनोबा जैसे ही किसी गाँव में पहुँचते, चारों ओर से उमड़कर लोग उनके पास पहुँचते। विनोबा गाँव–गाँव में ज़मीन माँगता फिरता और गरीबों में बाँटता। वे रूपया पैसा नहीं लेते। उनका कहना था कि रूपया–पैसा बाँट कर मैं गरीबों को शर्मिंदा नहीं करना चाहता। ज़मीन बाँटूँगा तो वे उस पर मेहनत करेंगे और अपना पसीना बहाकर फसल पैदा करेंगे। उसमें उन्हें शान मालूम होगी।

तेलंगाना में विनोबा जब गये, तो जनता में बड़ा डर फैला था कि पता नहीं कब कम्युनिस्ट आकर लूट लें। वे लोग 'रात के राजा' कहे जाते थे। विनोबा पहुँचे, तो उन्होंने प्रेम से इस मसले को सुलझाने की कोशिश की। उन्होंने कहा, ''बंदूक से यह काम पूरा होने वाला नहीं।'' विनोबा ने कम्युनिस्ट से कहा, ''मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि दिन–दहाड़े किस तरह लूटा जाता है। भूदान से होते–होते जब बात ग्रामदान पर आई तो कम्युनिस्ट विनोबा के विचारों को जानने लगे। विनोबा का भूदान आन्दोलन मालकियत मिटाने का आन्दोलन था। विनोबा सचमुच दिन–दहाड़े लूटते थे। विनोबा के समझाने पर जो व्यक्ति उन्हें एक एकड़ ज़मीन देना चाहता था वो तीन एकड़ देकर जाता था। वे हमेशा कुल ज़मीन का छटा हिस्सा दान में लेते थे, उससे कम नहीं। यों विनोबा प्रेम से दिन दहाड़े लूटते थे।

हर व्यक्ति अपनी किताब पर अपना नाम लिख लेता है ताकि कोई दूसरा उसे अपना न कहने लगे। विनोबा का मानना था कि किताब पर अपना नाम लिख लेने का अर्थ होगा कि, ''ये किताब मेरी है और इस पर किसी दूसरे का अधिकार नहीं है।'' किताब पढ़ने के लिए होती है। एक पढ़ ले तो दूसरे के पास जानी चाहिए। दूसरा पढ़ ले तो तीसरे के पास। इससे ज्ञान बढ़ता है। 'तेरी', 'मेरी', की भावना तो झगड़ों की जड़ है। हमें जो भी मिला है वो भगवान ने तथा समाज ने दिया है। फिर हम उसे अपना बनाकर क्यों रखें? विनोबा कहते थे कि घर, परिवार, ज़मीन, जायदाद, बच्चे सब भगवान के हैं। यह शरीर भी भगवान का है। हमारा काम तो इसकी देख–रेख करना है। हम किसी चीज़ से लगाव न रखें। छोड़ने की आदत जब तक नहीं जाएगी तब तक कोई काम नहीं बनेगा।

अप्रैल 1951 में तेलंगाना में तंगलपल्ली गाँव में विनोबा ने आपसी बैर भाव के कारण दो भाईयों द्वारा बनाए गए दो गुटों में सुलह करवाई। उन्होंने कहा कि, ''न तो हम साथ में कुछ लाए थे और न ही हमारे साथ कुछ जाएगा ही, फिर झगड़ा किस बात का?'' शाम की प्रार्थना के बाद विनोबा ने दोनों भाईयों के झगड़े को समाप्त कर आश्रम में गले मिलाया। दोनों भाईयों ने विनोबा को प्रणाम कर 90 एकड़ ज़मीन भूदान में दी और गाँव की सेवा करने का वादा भी किया। इसी प्रकार के और भी बहुत से किस्से हैं जिनके द्वारा विनोबा ने झगड़ों को निबटा कर परिवारों को एक होने में मदद की।

विनोबा के आश्रम में बीड़ी, तम्बाकू या अन्य किसी भी प्रकार का नशा करने की मनाही थी। परन्तु कभी–कभी कुछ लोग चोरी से इन चीज़ों का प्रयोग करते थे। विनोबा इन व्यसनों को छोड़ने के लिए बड़े प्रेम से लोगों को समझाते थे। विनोबा चोरी व व्यसन दोनों को छुड़ाने का प्रयत्न करते। विनोबा इन व्यसनों को छोड़ने के लिए बड़े प्रेम से लोगों को समझाते। वे जहाँ भी जाते वहाँ इस बात की कोशिश करते कि लोग शराब, ताड़ी, गांजा, भांग जैसी सभी नशीली चीज़ें छोड़ दें। इन व्यसनों में देश के लाखों, करोड़ों रूपए बर्बाद होते हैं और नशे में पड़कर दुनिया भर की बुराइयाँ होती है। उनका कहना था कि झूठ बोलना, सच्ची बात पर पर्दा डालना सबसे बड़ा पाप है। विनोबा का कहना था कि समाज में चोरी तभी मिटेगी, जब सब लोग काम करेंगे। इसके लिए सबको ज़मीन बाँटनी होगी, सबको काम देना होगा और गाँव में चलने वाले सब छोटे–बड़े धंधों को बढ़ाना होगा। उन्होंने कहा–

बिन श्रम खावे 'चोर' कहावे,
गीता की आवाज़ है!

असल में जीवन के सामाजिक और व्यक्तिगत, ऐसे दो टुकड़े होने ही नहीं चाहिए। जब तक ये दो टुकड़े नहीं होते तब तक जीवन में खिंचाव बना रहेगा। हमारा हर एक व्यक्तिगत कार्य सामाजिक और हर एक सामाजिक कार्य व्यक्तिगत होना चाहिए। हमारे और समाज के बीच दीवाल नहीं होनी चाहिए।

आचार्य विनोबा

ऑस्ट्रेलिया भ्रमण

देवराज त्यागी

मेलर्बोन

पिछले दिनों व्यक्तिगत प्रवास पर मुझे ऑस्ट्रेलिया जाना पड़ा तथा वहाँ पर एक महीना रहा। इस बीच वहाँ के कई शहरों में घूमना हुआ। वहाँ के बहुत सुन्दर शहर मेलर्बोन के बारे में बताना चाहूँगा। मेलर्बोन, ऑस्ट्रेलिया के राज्य विक्टोरिया की राजधानी है। यह यारा नदी के तट पर बसा है। यह नदी शहर को दो भागों में विभाजित करती है।

शहर का एरिया 9990 किमी. है। यहाँ देखने के लिए यारा वैली, क्वीन विक्टोरिया मार्केट, फेडेरेशन स्कॉयर, रॉयल बॉटनिक गार्डन, मेलर्बोन जू, नेशनल गैलरी ऑफ विक्टोरिया, ग्रेट ओशीयन रोड, मेलर्बोन म्यूजियम, फलाईडर स्ट्रीट, समुद्री जीवों का म्यूजियम (sea life), पार्लियामैन्ट हाउस, यूरेका स्काई डेक बिल्डिंग आदि हैं।

यहाँ की यारा नदी में तथा समुद्रों के तट पर क्रूज चलते हैं। इन क्रूजों में जल यात्रा के साथ भोजन, जलपान, कॉफी बार, संगीत एवं नृत्य के साथ–साथ फ्री वाई फाई की सुविधा भी उपलब्ध रहती है। मारबल स्टेडियम में विश्वस्तरीय खेल खेले जाते हैं तथा नये खिलाड़ी यहाँ खेल की प्रैक्टिस भी करते हैं।

यूरेका स्काई डेक की 88वीं मंजिल से पूरा शहर देखा जा सकता है। यह मेलर्बोन शहर की सबसे ऊँची इमारत है। ग्रेट ओशियन रोड पर एक तरफ नीले पानी का समुद्र तथा दूसरी ओर पहाड़ों का अद्वितीय नज़ारा देखने को मिलेगा।

यहाँ सिटी सर्कल के नाम से एक ट्राम चलती है जो निःशुल्क पूरे शहर का भ्रमण कराती है। यहाँ पर बसों में, ट्रामों में, मेट्रो ट्रेनों में टिकट देने के लिए कोई व्यक्ति नहीं मिलेगा, यहाँ यह सारे काम ऑनलाइन ही करने होते हैं। यहाँ की ट्रैफिक व्यवस्था बहुत ही सुदृढ़ एवं काफी अच्छी है। वाहन चालक स्वयं ही नियमों का पालन करते हैं। यहाँ पर दो पहिया वाहन, थ्री व्हीलर, ट्रैक्टर, ट्रॉली आदि सड़कों पर दिखाई नहीं देते। हर चालक अपनी लाईन की गति अनुसार अपनी लाईन में चल रहा होता है, यदि लाईन बदलनी हो तो पहले इंडीकेटर देना होता है। टोल रोड तो है पर टोल एंट्री प्वाईंट नहीं होता। आप टोल का भुगतान एक सप्ताह तक ऑनलाईन कर सकते हैं। यहाँ के गोल चक्करों की ऊँचाई कम होती है उसमें कोई वाहन टकरा नहीं सकता। जिन स्थानों पर ट्रैफिक लाईट नहीं होती तो

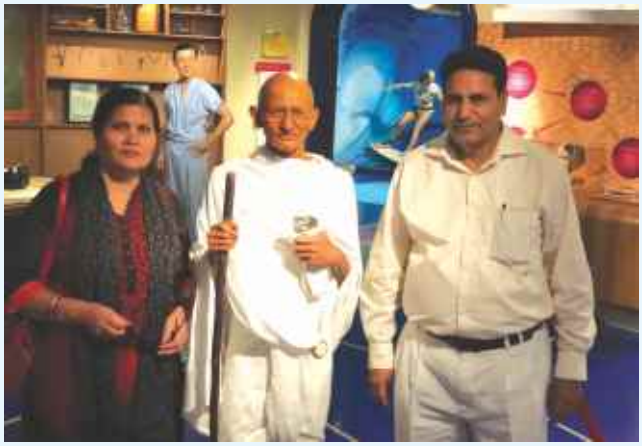

चालक को पहले अपनी दायीं ओर के वाहन जाने के बाद वाहन चलाना होता है। दो गाड़ियों के बीच की दूरी इतनी रहनी चाहिए कि पिछली गाड़ी के ड्राईवर को अगली गाड़ी के पिछले टायर अवश्य दिखने चाहिए। सीट बैल्ट हर व्यक्ति को, आगे तथा पिछली सीटों पर भी लगानी अत्यावश्यक है। सीट बैल्ट न लगाने पर चालान होगा तथा चालान उसी व्यक्ति का होगा जिस व्यक्ति ने सीट बैल्ट न लगाई होगी। हमारे यहाँ की तरह ड्राईवर अथवा गाड़ी का नहीं। यहाँ सभी वाहनों की गति एक सी होती है। ट्रक भी 110 किमी. प्रतिघंटे की रफ्तार से चलते हैं जैसे कि कारें इत्यादि।

गुरू नानक जी के 550वें प्रकाश दिवस पर गुरूद्वारा भी जाना हुआ। वहाँ पर ऐसा लगा कि सारा भारत ही यहाँ पर है। हज़ारों की संख्या में भारतीय लोग दिखाई दिये। भारत की सारी संस्कृतियाँ वहाँ नज़र आ रही थी। पंजाबी लोगों की बड़ी–बड़ी कारें वहाँ पर थी जिनमें ज्यादातर नम्बर, नाम के थे। ऑस्ट्रेलिया में अपनी नाम का नम्बर भी रजिस्ट्रेशन किया जा सकता है।

सिडनी शहरः

सिडनी, मेलर्बोन से लगभग 900 किमी. दूर है। सिडनी 12368 किमी. में फैला शहर है। यह न्यू साउथ वेल्स की राजधानी है। यह सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला शहर भी माना जाता है। यहाँ देखने योग्य बहुत सी चीजें हैं। हम मेलर्बोन से सिडनी कार से गए। कार द्वारा जाने पर लगभग साढ़े आठ घंटे का सफर रहा। यहाँ पर सड़कें बहुत ही सुंदर है तथा इन सड़कों पर चलने की गति फिक्स है। अधिकतम 110 किमी. प्रति घंटे की रफ्तार से गाड़ी चला सकते हैं। यहाँ पर बड़े लम्बे ट्रक (46 टायर के)

भी इसी गति पर दौड़ते हैं। सब लोग अनुशासित रहते हैं इसलिए कभी जाम नहीं लगते। इस 900 किमी के सफर में हमने देखा कि सरकार की ओर से जगह–जगह पर रैस्ट एरिया बने हुए हैं, वहाँ पर बाथरूम, बैठने के लिए स्थान तथा भोजन को गर्म करने की सुविधा निःशुल्क उपलब्ध है। ट्रकों एवं बड़े वाहनों के लिए खुला स्थान, उनके नहाने तथा सोने आदि की व्यवस्था भी की गई है। रोड पर वाहन खड़ा नहीं कर सकते, उसके लिए स्थान–स्थान पर जगहें बनाई हैं। सिडनी में हमने बिग बस का पूरे दिन का टिकट लिए। इस बस में छत पर बैठ कर यात्रा की तथा पूरे सिडनी शहर को देखा। सिडनी के बहुत ही प्रसिद्ध स्थान, ऑपेरा हाउस, सिडनी टावर आई, मैडम तुसाद संग्रहालय, वाइल्ड लाईफ जू, सी लाईफ एक्वेरियम, सिडनी हार्बर ब्रिज, बूंदी बीच, डार्लिंग हार्बर एवं कई अन्य बीच देखे जो अत्यंत सुंदर थे।

सिडनी ओपेरा हाउसः सिडनी ओपेरा हाउस एक विश्व प्रसिद्ध समुद्र के किनारे बना एक सांस्कृतिक आर्ट कल्चर केन्द्र है। यहाँ पर विभिन्न सात तरह के बड़े–बड़े ऑडिटोरियम बने हुए हैं जिनमें विभिन्न प्रकार के कल्चरल कार्यक्रम होते हैं।

सिडनी हार्बर ब्रिजः यह एक विश्व प्रसिद्ध ब्रिज है जो सिडनी के दो भागों को जोड़ता है क्योंकि इन दोनों के बीच समुद्र है। इस ब्रिज की लंबाई 1150 मीटर है। इस ब्रिज को बनने में 9 वर्ष लगे तथा 1932 से इस पर आवाजाही हो रही है। इसकी ऊँचाई 134 मीटर है। इस पर ट्रेन और रोड दोनों तरह के वाहन चलते हैं।

मैडम तुसाद म्यूजियमः इस म्यूजियम में विश्व प्रसिद्ध लोगों के मोम के पुतले बनाकर रखे गये हैं जो देखने में हूबहू जीवित लगते हैं। यहाँ पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, क्रिकेट खिलाड़ी सचिन तेंडुलकर, फिल्म स्टार ऐश्वर्या राय, शाहरूख खान, प्रियंका चोपड़ा, माईकल जैक्सन, नेल्सन मंडेला एवं अल्बर्ट आइंसटीन आदि के पुतले लगे हुए हैं।

सिडनी आई हार्बरः यह सिडनी की सबसे ऊँची इमारत है जहाँ से पूरे सिडनी को देखा जा सकता है। इसको देखने से पहले वहाँ पर एक 4डी फिल्म दिखाई जाती है जिसमें सिडनी व इस टावर के बारे में बताया जाता है।

हॉबर्ट शहरः

तस्मानिया एक टापू है जो मेलर्बोन से 700 किमी. है। हॉबर्ट शहर ऑस्ट्रेलिया की तस्मानिया राज्य की राजधानी है। इसका एरिया 1700 किमी. है तथा यह शहर 1804 में बसाया गया था। इस शहर की जनसंख्या 206000 के लगभग है। माउंट वेलिंगटन एक पहाड़ी का नाम है जहाँ से पूरे हॉबर्ट शहर को देखा जा सकता है। इसकी ऊँचाई 1270 मीटर है। यहाँ पर बहुत ठंडी हवायें चलती हैं ऐसा लगता है कि हम उड़ जायेंगे। यहाँ एक शीशे का रेस्ट रूम बनाया गया है जहाँ आप ठंडी हवाओं से बच सकते हैं। यह शहर पानी से घिरा है तथा अनेक बीच हैं जो अत्यंत सुन्दर हैं। जब हवाई जहाज उतरता है तो ऐसा लगता है कि यह समुद्र में जायेगा। समुद्र के हटते ही जहाज 6 सैंकडों में ज़मीन पर लैन्ड कर जाता है। यहाँ पर खाने–पीने का सामान, इत्यादि ले जाना मना है। हवाई अड्डे पर कुत्तों के द्वारा चैकिंग की जाती है। यहाँ पर बॉटनिकल गार्डन भी है जहाँ पर विभिन्न प्रकार के फूल इत्यादि हैं। हॉबर्ट में हम गोवा, हरिद्वार तथा शिमला के दर्शन एक साथ कर सकते हैं।

मारू पार्कः मारू (MARU) नाम की जगह मेलर्बोन से 90 किमी. दूर है। यहाँ समुद्र के किनारे पर एक ऐनीमल पार्क बनाया गया है। यहाँ पर आप ऑस्ट्रेलिया के प्रसिद्ध जानवर कंगारू से मिल सकते हैं। उसको भोजन करा सकते हैं, उसके पास खड़े होकर फोटो खिंचवा सकते हैं। कंगारू के अलावा यहाँ पर अजगर, क्रोकोडायल एवं कुछ अन्य जानवरों को देख सकते हैं।

बैलाराट (Ballarat) : बैलाराट शहर मेलर्बोन से लगभग 110 किमी. दूर है। यहाँ पर 1850 में सोने की खाने पाई गई थी। यह शहर सॉविरन पहाड़ी पर 344 किमी. एरिया में स्थित है तथा यहाँ की जनसंख्या लगभग एक लाख है। इस कारण यह एक ऐतिहासिक नगरों में गिना जाता है। सोने की खानो को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है तथा किस तरह सोना ज़मीन से निकाल कर इस्तेमाल होने तक का प्रयोग दिखाया जाता है। यहाँ के पुराने घर, मकान, दुकान, कारोबार किस तरह चलते थे वह भी दिखाया जाता है। यह पूरा क्षेत्र एक गांव की तरह बसाया गया है।

जीलोंग शहरः मेलर्बोन शहर से लगभग 100 किमी. दूर यह जीलोंग शहर समुद्र के किनारे पर बसा है। इसका एरिया 919 किमी. तथा आबादी लगभग 2 लाख 60 हज़ार की है। यह बहुत सुंदर बसा हुआ है। यहाँ पर नेशनल वूल म्यूजियम, बॉटोनिक गार्डन, बार फ्रंट बीच, एडवेन्चर पार्क आदि स्थान देखने योग्य है।

प्रस्थान आश्रम, पठानकोट (पंजाब)

पूज्य विनोबा जी ने अपनी भारत व्यापी पदयात्रा के दौरान देश के भिन्न–भिन्न स्थानों पर छः आश्रमों की स्थापना की। जब वे कश्मीर की पदयात्रा से लौटे तो उन्होंने 1 नवम्बर 1959 को पठानकोट को पंजाब–हरियाणा, हिमाचल, कश्मीर का संगम तथा पाकिस्तान अफगानिस्तान और तिब्बत को पड़ोसी मान कर यहाँ पर प्रस्थान आश्रम की स्थापना प्रकट की।

पूज्य विनोबा जी के कथानुसार इस आश्रम के द्वारा ब्रह्म विद्या की साधना के साथ–साथ यहाँ से उत्तर पश्चिमी भारत के प्रांतों तथा परिस्थिति अनुकूल होने पर पड़ोसी मुल्कों से सर्वोदय विचार एवं जीवन दर्शन का प्रस्थान प्रसार हो शान्ति सेना का केन्द्र बने, साधना व शिक्षा का काम हो, नगर में सघन संपर्क हो, सर्वधर्मों से हार्दिक संपर्क बने, सर्वोदय साहित्य का व्यापक प्रसार प्रकाशन हों।

इसी दृष्टि से पूज्य विनोबा जी ने इस आश्रम का नाम प्रस्थान आश्रम रखा और उनके आदेशानुसार पठानकोट नगर के बिल्कुल समीप खानपुर में रमणीय शान्त और

साधना के लिए उपयुक्त स्थान पर 20 मई 1960 को इस आश्रम की नींव रखी गई। आश्रम के लिए संचालन समिति नियुक्त करते हुए उन्होंने देश के सुप्रसिद्ध सर्वोदय सेवक और साधक श्री यशपाल जी मित्तल को संचालन की जिम्मेदारी दी और उनके आग्रह पर महान जीवन साधक दिल्ली में सेवारत पूज्यसत्यम भाई जी को भी प्रस्थान आश्रम भेजा जो लगातार 23 वर्ष यहाँ निरन्तर साधनामय सेवारत रहे।

आश्रम अपने उद्देश्यों की दिशा में निरन्तर अग्रसर है। आश्रमजन द्वारा सामूहिक प्रार्थना स्वाध्याय सूत्र यज्ञ, शरीर श्रम द्वारा अनवरत साधना के साथ–साथ समय–समय पर उच्चकोटि के महापुरूषों, जिज्ञासु साधकों का आश्रम पधारना होता है और सबके भोजन निवास और साधना की सादगी पूर्ण समुचित व्यवस्था है। आश्रम का अपना पुस्तकालय और वाचनालय भी है और विभिन्न भाषाओं का सर्वोदय और सद्साहित्य यहाँ उपलब्ध है। कृषि गोशाला की प्रवृत्ति भी है। समय–समय पर लम्बी क्षेत्रीय यात्राओं राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय शिविरों परिसंवादों और सम्मेलनों का यहाँ आयोजन होता रहता है। पिछले कुछ वर्षों से गांधी विचार के महान अध्येता श्री एस. रिन्पोछे जी का सक्रिय मार्गदर्शन भी मिल रहा है। प्रस्थान आश्रम चैरिटेबल सोसाइटी एक्ट के अन्तर्गत रजिस्टर्ड स्वायत्त संस्था है।

पिछले कुछ वर्षों से प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग केन्द्र भी चल रहा है जिसमें प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा इलाज किया जाता है।

अब तक हुए विशेष कार्यक्रम

पंजाबी सूबा के लिए आन्दोलन हो या 1985 तथा 71 के भारत पाक युद्ध को विषम परिस्थिति में आश्रम सेवकों ने घर–घर जाकर साम्प्रदायिक सद्भाव तथा नागरिकों का मनोबल कायम रखने का प्रयत्न किया।

राष्ट्रीय तरूण शांतिसेना का बड़ा शिविर।

विनोबा जी गोहत्या बंदी अभियान के समय आश्रम द्वारा लम्बी यात्रा के अतिरिक्त पूरे उत्तर क्षेत्र ने गोहत्यावंदी अभियान का आयोजन किया। पंजाब से गोवंश निकासी बंद करवाने हेतु लम्बा सत्याग्रह हुआ और फलस्वरूप पंजाब से गोवंश निकासी पर कानूनी प्रतिबंध लगा।

पंजाब के आतंक के काले दौर में लगातार 12 साल बिना किसी सरकारी सुरक्षा के परस्पर प्रेम, विश्वास और सौहार्द बनाने हेतु निर्भय निर्वैर और निष्पक्ष की भूमिका में शांति, सद्भावना यात्राओं के माध्यम से (और अब जम्मू कश्मीर में भी) पीड़ितों के दुख दर्द में शामिल होकर राहत का आश्रम द्वारा कार्य हुआ।

उर्दू पंजाबी में गांधी विनोबा जी के साहित्य का प्रकाशन।

गीता प्रवचन स्वर्ण जयंती महोत्सव का आयोजन।

प्रतिवर्ष पूरे क्षेत्र की लंबी सर्वोदय विचार प्रचार यात्राएं।

प्रतिवर्ष गुण विकास हेतु कार्यकर्ता शिविर का आयोजन तथा तरूण शिविर।

आश्रम पधारने वाले विशिष्ट जनः – परमपूज्य शिवाजी भावे। लोकनायक जयप्रकाश नारायण, माता निर्मला गांधी, आशा देवी आर्यनाक्रम, श्री कृष्णकांत, श्री मण नारायण, दादा धर्माधिकारी, श्री चंद्रशेखर धर्माधिकारी, श्री बल्लभ स्वामी, श्री सादिक अली, श्री आर. आर. दिवाकर, बहन विमला ठक्कर, डॉ. सुशीला नैयर, बहन राधा भट्ट, श्री विचित्र भाई, श्री निर्मला देशपांडे, परम पावन दलाई लामा जी, श्री राधाकृष्ण बजाज, श्री अरूणाचलम जी, श्री रविन्द्र उपाध्याय, आचार्य राममूर्ति, श्री सिद्धराज ढड्डा, ठाकुरदास बंग, श्री कृष्ण राज मैहता, डॉ. एस. एन. सुब्बाराव आदि महापुरूषों का (क्षेत्र के मूर्धन्य नेताओं के अतिरिक्त) आश्रम पधारने का और शिविर सम्मेलनों, कार्यक्रमों में मार्गदर्शन के लिए रूकना हुआ है।

जिसके चित्त में तरंग उठते ही रहते हैं वह सत्य के दर्शन कैसे कर सकता है। चित्त में तरंग का उठना समुद्र में तुफान जैसा है। तुफान में जो सुकानी सुकान पर काबू रख सकता है, वह सलामत रहता है। ऐसे ही, चित्त की अशांति में जो रामनाम का आश्रय लेता वह जीत जाता है।

शिक्षण केवल पुस्तकों में भरा नहीं रहता। इसलिए शिक्षण पुस्तकाधारित नहीं होना चाहिए। आजकल ज्ञान, पुस्तक की जिल्द के बाहर नहीं निकलता। इस तरह की योजना ज़रूरी है कि वह व्यवहार में बाहर नहीं निकलता। इस तरह की योजना ज़रूरी है वह व्यवहार में प्रकट हो। शास्त्र और कला (शास्त्र की विनियुक्त करने की रीति) जानने के बाद भी प्रत्यक्ष आचरण देखने से ही बच्चों का जीवन बनता है। केवल तरह–तरह का सुनने या पढ़ने से बच्चों की बुद्धि भ्रांत हो जाती है।

गुण–विकासकारी शास्त्रों की अपेक्षा, विकारों को उत्तेजना देनेवाला साहित्य बढ़ रहा है। ऊपर के कवर को भीतर के विचार के बदले, ज्यादा महत्व दिया जा रहा है और पुस्तक मँहगी होने पर भी बिकती है।

शिक्षण का स्वरूप ऐसा हो कि लोग जागृत हो, सार–असार विवेक सीख सकें। तभी समाज में ज्ञान का मूल्य बढ़ेगा।

विनोबा

मन को वश में कैसे करें

डॉ एम.पी. डोगरा, मुख्य चिकित्सक
गांधी स्मारक भवन, सैक्टर–16 ए, चण्डीगढ। सम्पर्क – 0172–2770976

रण भूमि में कृष्ण और अर्जुन खड़े हैं? भगवान कृष्ण अर्जुन को युद्ध करने के लिए कह रहे हैं। परन्तु अर्जुन है कि मान नहीं रहा। प्रभु! यह जो सामने खड़े हैं यह सब मेरे भाई–बंधु, गुरूजन, पितामह, मेरे सगे सम्बन्धी हैं। इनसे युद्ध कैसे कर सकता हूँ? न, मैं नहीं करूँगा इन्हें मारने से मेरे को पाप ही लगेगा – भाग रहा है रण भूमि से।

परन्तु भगवान उसे भागने कैसे देते। वह कह रहे है। युद्ध क्षेत्र कर्म क्षेत्र है। यह तेरा धर्म है। कुन्ती पुत्र तू युद्ध कर तब गीता के छठे अध्याय में अर्जुन को, क्षत्रिय धर्म क्या है। उसका पालन करने के लिए भिन्न–भिन्न श्लोकों द्वारा उसे समझा रहे हैं और यह कह रहे हैं, तू ध्यान कर ।

देखो ध्यान की बात कहाँ कही जा रही है, युद्ध भूमि में! भगवान का यही तो कमाल है, कौन सी बात कब और कहाँ कहनी है वह जानते हैं। जब वह अपनी बात कह लेते है तो अर्जुन अब लगभग ध्यान के लिए उत्सुक हो जाता है। परन्तु मन है कि ठहरता ही नहीं।

अर्जुन कहता हैं...

चंचलं हि मनः, कृष्ण प्रमाथि बलवद् दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुश्करम्।।

हे कृष्ण यह मन तो बहुत चंचल है, बेचैन है, ढीठ है, भागता है इधर–उधर, बहुत ताकतवर है, यह तो वायु के समान चंचल है, इसे वश में करना तो बहुत कठिन कार्य है। यह मुझसे नहीं होगा।

भगवान कहते है.....

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृहाते।।

प्रभु कहते हैं कि मैं यह मानता हूँ यह इतना आसान भी नहीं है, मन बेचैन और चंचल नहीं परन्तु अति चंचल है और चंचलता ही इसका गुण है। परन्तु अभ्यास करने से इसे वश में किया जा सकता है। "तू दृढ़ निश्चय से अभ्यास कर, बस यही तेरा कर्म है।

भगवान कृष्ण आगे और विस्तार से कहते हैं, योग, त्याग, अभ्यास करने से मन शान्त होता है। जब तक तुम तमस् और रजो, गुणों का त्याग नहीं करोगे तो सदगुण उजागर नहीं होगा। यह सब जरूरी है। जब तक ज्ञानेन्द्रियों पर पूर्ण तरह से लगाम नहीं लगाओगे तो यह मन काबू में नहीं आयेगा, भटकाता ही रहेगा।

मन का स्वभाव चंचल तो है ही, एक तरफ से पकड़ो तो दूसरी तरफ से भाग जाता है। मन कोई इच्छा करता है, जब वह पूर्ण होने के करीब होती है तो मन कोई नई इच्छा जागृत कर लेता है और फिर आगे से आगे भागता रहता है और सबको अपने पीछे भगाता रहता है।

"मन एक अच्छा सेवक है, परन्तु बुरा मालिक है।"
"Mind is a good Slave and bad Master"

इसलिए इसको योग, त्याग, अभ्यास से अपने वश में करके रखा जा सकता है।

मन का गुण चंचलता ही है, मान लो आपने इसको पूर्ण रूप से वश में कर लिया और चुपचाप एक कोने में बैठा दिया तो सोचो जीवन को क्या होगा? जीवन नीरस नहीं हो जायेगा? मन में कोई उमंग, तरंग उठती है तो जीवन गतिमय रहता है और तभी जीवन में गति, रस और रंग है नहीं तो बेरंग फीका हो जायेगा। इससे अच्छा होगा आपको मन का ठीक ढंग से उपयोग करना आना चाहिए और यह तभी होगा जब आप इसको पूर्ण रूप से साध लेगें जो कि, पूर्ण योग, अभ्यास और त्याग से सम्भव हो सकता है। इस लिए मन को शत्रु न समझ कर मित्र समझे और इसका सदुपयोग करना सीखें।

जब हम लगातार अभ्यास करेंगे तो वैराग्य की स्थिति अपने आप उत्पन्न होती है। और यह वैराग्य (Detachment) ही

है जिसके आने से मन शान्त होता है। परन्तु हम करते क्या हैं ज्ञानेन्द्रियों पर काबू करने के लिए वस्तुओं को छोड़ते जाते हैं, कभी यह छोड़ा, कभी वह छोड़ा, मन को मार रहे हैं, इच्छाओं को मार रहे हैं, दबा रहे हैं। ऐसे जीवन में कई और रोग पैदा कर लेते है। बल पूर्वक इच्छाओं को दबाने से शरीर में भयंकर रोग उत्पन्न हो जाते है, अल्सर तक बन जाता है। मन कुछ करना चाहता है परन्तु व्रत लिया हुआ है। कोई कहता है कि मांस छोड़ दिया, मदिरा छोड़ दी, कोई कहता है कि ब्रह्मचर्य का व्रत लिया है, कामवासना को छोड़ दिया, इससे कुछ नहीं होगा। आपने बल पूर्वक इन सबको दबा दिया है जो कि कभी भी ज्यादा वेग के साथ उभर आयेगा क्योंकि त्याग नहीं किया, इच्छाओं को दबाया है। भगवान कहते है कि यह सब अपने आप छूट जाये तो सच्चा वैराग्य उत्पन्न होगा, तब मन शान्त होगा। इसके लिए नित्य अभ्यास करना होगा और तब मन में एक सम्भाव (Equanimity) उत्पन्न होगा तब फिर न कोई दुःख है, न कोई सुख है, एक शान्ति है जो हर समय बनी रहेगी।

दीप जलाएँ

प्रेम विज

सभी मिल कर दीवाली मनाएँ तो जानें
गरीब के घर भी दीप जलाएँ तो जानें।

रंगों व धर्मों में बंटे हुए हैं सभी
इंसानियत का दीया जलाएँ तो जानें।
मूर्ति को अर्पित की जाती हैं मिठाईयां
भूखे बच्चों को भी खिलाएँ तो जानें।

खूबसूरत रोशनी से सभी चमका लेते हैं घर
मिट्टी के दीए से चमकाएँ तो जानें।
लड़ाई–झगड़े तो सभी कराते हैं
कोई मुहब्बत का दीया जलाए तो जानें

कूड़े कर्कट पर दीया तो जलाते हैं
सैनिकों के नाम जलाया जाए तो जानें।
'प्रेम' प्यार का ऐसा दीया जलाया जाए
जो दिलों में खुशियां भर दे तो जानें।

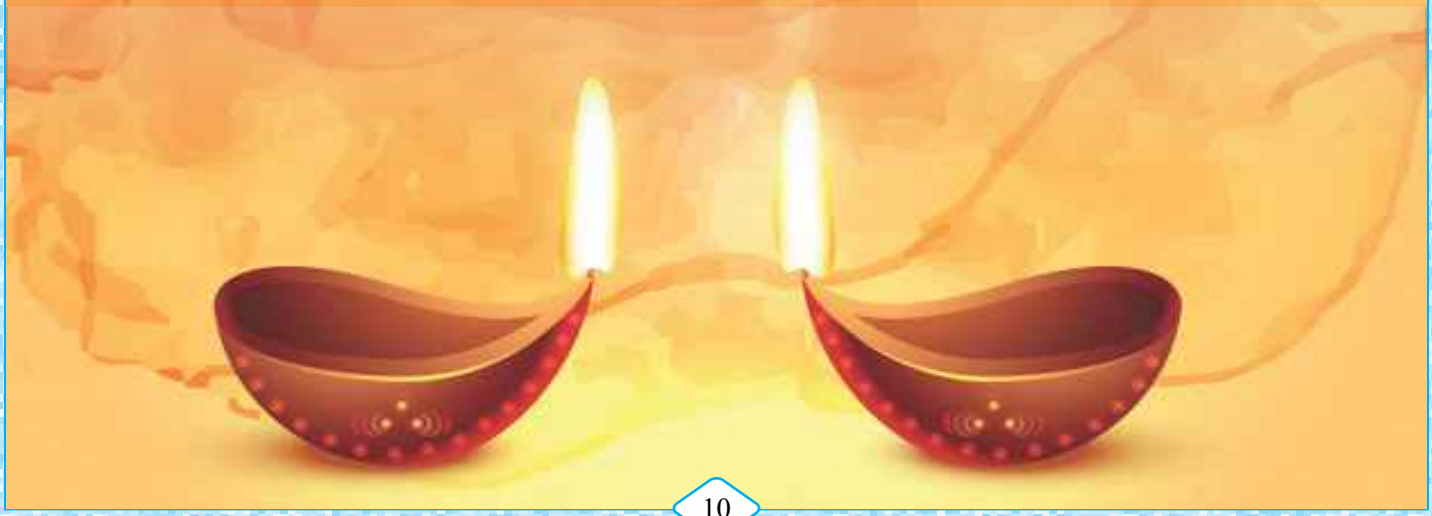

गांधी इतिहास के पन्नों पर

डॉ. प्रज्ञा शारदा

महात्मा गांधी, भारत के राष्ट्रपिता जो पूरी दुनिया में भारत के सबसे बड़े ऐंबैसडर हैं। पोरबंदर के जिस घर में महात्मा गांधी का जन्म हुआ था वह आज एक संग्रहालय में बदल चुका है जिसका नाम 'कीर्ति मंदिर' है। बापू जिस घर में पैदा हुए थे, उसे उनके प्रपितामह यानी दादा के पिता हरिजीवन दास ने 1777 में एक स्थानीय विधवा महिला मांड़बाई से खरीदा था। उस समय यह मकान सिर्फ ग्राउंड फ्लोर पर था। फिर हरीजीवन की अगली पीढ़ियाँ इस मकान को ऊँचा करती गई। गांधी जी का जन्म इस मकान में ज़रूर हुआ था, लेकिन उनका ज़्यादातर बचपन राजकोट में बीता, क्योंकि बापू के पिता करमचंद गांधी और दादा उत्तमचंद गांधी पोरबंदर स्टेट के दीवान थे। 1944 में बापू से इजाजत मिलने के बाद 1945 में कीर्ति मंदिर बनाने का काम शुरू हुआ, लेकिन इससे पहले ही यह पूरा हो पाता, बापू रहे नहीं। 79 साल की उम्र में बापू का निधन हुआ था, इसलिए कीर्ति मंदिर को 79 फीट ऊँचाई का बनाया गया। महात्मा गांधी के जन्म स्थान को स्वास्तिका के साथ चिन्हित किया गया है।

26 जनवरी 1950 को देश में डॉ. आंबेडकर और उनकी टीम द्वारा तैयार किया गया संविधान लागू हुआ। कीर्ति मंदिर का काम भी इसी के आसपास पूरा हो गया था। फिर 27 मई 1950 को देश के पहले गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कीर्ति मंदिर का उद्घाटन किया था। सरदार पटेल ने ये उद्घाटन फीता काट कर नहीं बल्कि चाबी से ताला खोल कर किया था। उद्घाटन के बाद से अब तक मंदिर की इमारत में न्यूनतम बदलाव किए गए हैं। चीज़ों को वैसा ही रखने की कोशिश की गई, जैसी वो बापू के जन्म या मंदिर तैयार होने के समय थी। मंदिर की दीवारों को महात्मा गांधी और उनकी पत्नी कस्तूरबा गांधी के जीवन को यहाँ चित्रों के माध्यम से देखा जा सकता है।

''अहिंसा परमों धर्म...'' यह तीन शब्द पढ़कर यकीनन हमें महात्मा गांधी की याद आती है जिन्होंने अहिंसा के रास्ते पर चल कर ''सोने की चिड़िया'' यानी भारतवर्ष को आसमान में उड़ने की आजादी दिलाई।

दक्षिण अफ्रीका के शहर जोहान्सबर्ग में अपनी ज़िंदगी के महत्वपूर्ण 21 वर्ष व्यतीत करने के पश्चात गांधी की याद में यहाँ 'सत्याग्रह हाऊस' बनाया गया जिसे आमतौर पर गांधी हाउस के रूप में जाना जाता है। यह जोहन्सबर्ग की ऐतिहासिक विरासत के रूप में पंजीकृत है।

अहमदाबाद में गांधी आश्रम है जिसे साबरमती आश्रम के नाम से जाना जाता है। यहाँ गांधी जी ने अपनी पत्नी कस्तूरबा गांधी के साथ 12 वर्ष बिताए। यहीं से गांधी जी ने दांडी मार्च की शुरूआत की थी।

अरब सागर के तट पर स्थित दांडी से ही नमक सत्याग्रह अपनी परिणति तक पहुँचा। साबरमती से दांडी तक की यात्रा 268,5 किलोमीटर की थी जिसे 24 दिनों में पूरा किया गया।

गांधी स्मृति जिसे अब बिरला हाउस (नई दिल्ली) के रूप में जाना जाता है में महात्मा गांधी को समर्पित एक संग्रहालय है जहाँ गांधी जी ने अपने जीवन के अन्तिम पलों के 144 दिन बिताए। पूर्वी दिल्ली में स्थित राजघाट भी गांधी जी को समर्पित किया गया है। यह महात्मा गांधी का समाधि स्थल है जिसे 31 जनवरी 1948 को उनकी हत्या के उपरान्त बनाया गया था।

भारत विभिन्नताओं में एकता के सूत्र से संचालित एक ऐसा राष्ट्र है, जहाँ बोली, खानपान, संस्कृति, समाज एवं जातिगत व्यवस्थाओं का जो ताना–बाना बना हुआ है वह अनेकता में एकता के दर्शन करवाता है।

हमने महात्मा गांधी की अधिकतर तस्वीरों में उनके आसपास लोगों की भीड़ को देखा है जिसमें जवाहर लाल

नेहरू, सरदार पटेल तथा कस्तूरबा गांधी प्रमुख थे। कुछ ऐसे लोग जो गांधी के विचारों की वजह से उनके बेहद करीब रहे। इन लोगों की जिदंगी पर गांधी का गहरा असर रहा। ये लोग उसी रास्ते पर अपनी–अपनी जिदंगी में बढ़े जिस रास्ते पर महात्मा ने चलना शुरू किया था। इनमें महिलाएँ भी थीं। उनकी दो अनुयायी मनु और आभा उनके अंतिम वक्त के संघर्ष और तकलीफों की गवाह भी बनी जब नाथुराम गोडसे ने गांधी पर गोलियाँ दागी और उन्होंने इन महिलाओं की करीबी में दम तोड़ा क्योंकि प्रार्थना के समय वे साथ थीं।

गांधी जी का जीवन किसी नदी की भांति था जिसमें कई धाराएं मौजूद थी, उनके अपने जीवन में शायद ही कोई ऐसी धारा रही हो जिन पर उनका ध्यान न गया हो या फिर उन्होंने उस पर अपने विचारों को प्रकट नहीं किया हो। संघर्ष और उसके साथ सकारात्मक गतिविधियाँ उनके जीवन में एक साथ समानान्तर चलती रही। आजादी की लड़ाई के साथ–साथ उन्होंने हिन्दू–मुस्लिम एकता, चिकित्सीय ज्ञान की उपयोगिता, छुआछूत उन्मूलन तथा अनेक दूसरे उद्देश्यों पर काम करने के साथ–साथ लोगों को सत्य और अहिंसा की महानता को बताने की काफी कोशिशें की। उनके बहुत से प्रयोग नाकाम भी रहे और बहुत से प्रयोगों से लोगों के जीवन को नई दिशा मिली। गांधी जी की प्रेरणा तथा उनकी क़द्दावर शख्सियत के असर से जोग अपने बुरे तत्वों को दूर रखने और अच्छे तत्वों को बाहर निकालने में कामयाब भी रहे।

गांधी ने साम्राज्य को आत्मा की ताकत से हिलाया, प्रार्थना से हिलाया, सामान्य मनुष्य की भांति जीकर तथा अपना काम करते हुए बिना पीर, पैगम्बर या अवतार कहलाए, बिना किसी धर्म या मजहब को छोटा दिखाए। गांधी इस पूरी धरती का स्वाभिमान थे। गांधी ने सरस्वती पूजन के लिए मूर्ति या फोटो नहीं लगाया बल्कि ज्ञान की सरस्वती का अध्ययन और कर्म से पूजन करना सिखाया। गांधी ने पराई पीर को जानने तथा उसे दूर करने का धर्म अपनाया था। वे मानते थे जिस देश या समाज के पास चिंतन और चेतना नहीं, वह ज्ञान और सेवा का देश या समाज नहीं बन सकता। गांधी प्रकृति भी थे, पुरूष भी, नैतिक भी थे और नेतृत्व में नीतिवान भी।

1. आज ज़रूरत खुद से सवाल पूछने की हैं, क्या उन्हें याद करना बुद्धिमता है या फिर भुला देना?
2. क्या हमें उनका नाम केवल सरकारी कार्यक्रमों में लेना है?
3. क्या हमें उनकी मूल्यवान विरासत में कोई दिलचस्पी नहीं होनी चाहिए?
4. गांधी को केवल मार्केटिंग गुरू और ग्रेट कम्यूनिकेटर के तौर पर ही पेश करना चाहिए?
5. उनके संघर्षों को एक तरफ रख कर हम लोग केवल स्वच्छता को गांधी की विरासत का संकेत ही मान लेंगे तो यह काफी सतही नजरिया होगा, जिसमें मूल तत्वों का अभाव होगा।

गांधी ने सार्वजनिक जीवन के लिए भी हमें खराब लोगों के लिए खराब होना नहीं सिखाया बल्कि खराब लोगों के प्रति ईमानदार होना सिखाया था। गांधी जी जीवन भर खुद को बेहतर बनाने की कोशिश में लगे रहे। उनका मानना था कि किसी संस्थान के प्रति हम पूरी तरह समर्पण कर दें यह हमारा लक्ष्य, आदर्श या उपलब्धि नहीं होनी चाहिए। ऐसी स्थिति में हमारी सोच प्रक्रिया तथा हमारा दिमाग, दोनों ही स्वतंत्र नहीं रह पाते।

गांधी क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़े बिन ही हर तरह से एक क्रांतिकारी थे। वे भारत एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। विश्व पटल पर गांधी सिर्फ एक नाम नहीं अपितु शान्ति और अहिंसा का प्रतीक है। तभी तो संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी वर्ष 2007 से गांधी जयंती को 'विश्व अहिंसा दिवस' के रूप में मनाए जाने की घोषणा की है।

गांधी जी के बारे में प्रख्यात वैज्ञानिक आईंस्टीन ने कहा है कि–

'हज़ार साल बाद आने वाली नसलें इस बात पर मुश्किल से विश्वास करेंगी कि हाड़–मास से बना ऐसा कोई इंसान भी धरती पर आया था।'

प्राकृतिक चिकित्सा – मिट्टी का योगदान

रमेश कुमार
2203/22 सी, चण्डीगढ़। मो. न. 9815774518

पंच महाभूत – पंच तत्व

पूर्णसंसार पंचमहाभूत से निर्मित माना जाता है। ये हैं –: आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी। ये पाँचों तत्व ही प्राकृतिक चिकित्सा के आधार हैं। इन्हीं तत्त्वों से विनिर्मित शरीर का उपचार भी प्राकृतिक चिकित्सा में इन्हीं पाँच तत्त्वों से किया जाता है।

पृथ्वी (मिट्टी) तत्त्व से उपचार

मिट्टी की महिमा तो वेद शास्त्रों ने गाई है। सुप्रसिद्ध मिट्टी महान चिकित्सक एडोल्फ जस्ट, जिन्हें मिट्टी के पादरी कहा गया, ने अपनी पुस्तक 'रिटर्न टू नेचर' (प्राकृतिक जीवन की ओर) में मिट्टी को सर्वरोगहारी आरोग्य संजीवनी के रूप में महत्ता बताई है। मिट्टी की आरोग्यदायी शक्ति ही वन्य जन्तुओं को स्वस्थ रखती है। पृथ्वी पर सोने से पाचन तन्त्र सबल सुदृढ़ बना रहता है। जिनकी पाचन शक्ति कमजोर होती है उन्हें घरती पर सोने की सलाह दी जाती है।

किन–किन रोगों में लाभप्रद

मिट्टी को सर्वरोगहारी कहा गया है। पेट को सब रोगों की जड़ माना जाता है। पेट या पेडू पर मिट्टी की पट्टी रखने से विजातीय द्रव्य पेडू प्रदेश में आ जाता है, जिसे मिट्टी सोख लेती है या बड़ी आँत के माध्यम से मल द्वारा विजातीय द्रव्य शरीर से बाहर निकल जाता है। गीली मिट्टी का प्रयोग पीड़ित अंगों पर भी किया जाता है। मुँहासें में चेहरे, आँखों के रोग में पलकों पर टिकिया बना कर रखते हैं। कान के रोगों में कान के आस पास, गठिया आदि में जोड़ों पर, सूजन वाले स्थान पर, लू लगने पर पैरों के तलवे, माथे व पेडू पर, चमड़ी के रोगों (फोड़े–फुन्सी, खुजली, श्वेत कुश्ठ) में सारे शरीर पर मिट्टी का लेप करते हैं। बवासीर में गुदा पर ठंडी मिट्टी क गोला सी बना कर रखते हैं। तेज बुखार में जब शरीर गर्म हो तो माथे तथा पेडू पर ठंडी पट्टी बार–बार बदल कर रखते हैं। बिच्छू आदि के काटने पर डंक वाले स्थान पर बार–बार महीन मिट्टी की पट्टी व लेप करते हैं। साँप के काटने पर बारीक मुलायम मिट्टी एक गड्ढे में भर कर रोगी को लिटा देते हैं तथा ऊपर से मिट्टी डालकर गर्दन से नीचे का भाग मिट्टी से ढकते हैं। पाचन क्षमता की कमी, कब्ज, आँव, अजीर्ण, उच्च रक्तचाप, लिवर की सूजन आदि में मिट्टी की पट्टी लाभदायक है।

मिट्टी की विशेषताएँ

1. मिट्टी में विष आदि विजातीय द्रव्यों के अवशोषण का गुण है।
2. यह आँतों में जमे पुराने मल को उखाड़ती है।
3. सूजन, दर्द, फोड़े–फुन्सी में लाभदायक है।
4. आँतों के अंदर की गर्मी को खींचती है।
5. जलन, तनाव को दूर करती है।
6. शरीर को जरूरी ठंडक प्रदान करती है।
7. शरीर में स्फूर्ति आती है।
8. शरीर में शक्ति का संचार होता है।
9. शरीर को चुम्बकीय शक्ति मिलती है।
10. चमड़ी के रोमकूपों को खोल देती है जिससे अधिक मात्रा में ऑक्सीजन मिलती है।
11. रक्त संचार ठीक करती है।
12. त्वचा को सुंदर व स्वस्थ बनाती है।

उपयोग विधि

1. **टहलना व शयनः**– निर्दोश, स्वच्छ भूमि पर नंगे पैर टहलना चाहिए। जिन्हें सुविधा हो सोने के लिए मुलायम जमीन पर बिस्तर लगायें। पहलवान रूई के गद्दे के बजाय मुलायम मिट्टी पर कुश्ती लड़ते हैं, कसरत करते हैं ताकि शरीर को मिट्टी के अमूल्य गुणों का लाभ मिल सके।
2. **स्नानः**– महात्मा गांधी जी मिट्टी लगाकर स्नान करते थे न कि साबुन से। स्वच्छ मिट्टी साबुन से कई गुणा अच्छी है। मिट्टी मैल को दूर कर रोमकूपों को खोलती है, ताजगी लाती है, त्वचा कोमल, चमकीली बनती है। गर्मी के दिनों में उठने वाली पित्त, घमौरियाँ, फुंसियाँ इससे दूर होती हैं।

3. **बालों को धोना:**— मुलतानी मिट्टी से बाल धोने का रिवाज पुराने समय से आज तक चल रहा है। बाल काले, मुलायम व चिकने रहते हैं। दिमाग में ठंडक व तरावट पहुँचती है।
4. **पेट पर गीली मिट्टी की पट्टी का प्रयोग:**— पाचन तंत्र के रोगों को दूर करती है। मन्द जठराग्नि ठीक होती है। पेट गैस, जलन, कब्ज आदि दूर होते हैं।

उपचार के लिए मिट्टी की तैयारी

कूड़ा–कर्कट रहित साफ स्थान की चिकनी मिट्टी उपचार के लिए उत्तम है। जमीन में 3–4 फीट नीचे की मिट्टी खोद कर, उसे छलनी में डालकर धूप में अच्छी तरह सुखाएँ जिससे हानिकारक सूक्ष्म जीव नष्ट हो जाएँ। उपचार से 8–10 घण्टे पहले जिस पात्र में मिट्टी तैयार करनी हो उसमें मिट्टी पहले डाल ऊपर से खौलता गर्म पानी इतना डालें कि मिट्टी गीली हो जाए। गर्म पानी का कारण रोगाणु रहित बनाना है। यदि मिट्टी धूप में सूखी हो तो सामान्य पानी में, रोटी बनाने के आटे जैसे सान लें।

मिट्टी की पट्टी

पेट पर मिट्टी की पट्टी:— माप: लम्बाई 15 इंच से 24 इंच, चौड़ाई 8 इंच से 12 इंच, गहराई 1 से 1½ इंच। लकड़ी के साँचे में थोड़ी सी महीन सूखी मिट्टी फैला दें जिससे गीली मिट्टी साँचे में नहीं चिपकेगी। पेट पर साँचे से मिट्टी पलट कर साफ सूती कपड़ा उस मिट्टी की पट्टी पर ढक दें। या साँचे में साफ सूती कपड़ा रख कर गीली मिट्टी समतल भर दें।

आँख व मस्तक पर:— माप: लम्बाई 9 इंच से 12 इंच, चौड़ाई 4 इंच से 6 इंच, गहराई 1 से 1½ इंच।

सावधानियाँ

1. एक बार प्रयोग में लाई मिट्टी को दोबारा प्रयोग न करें।
2. आपके आस–पास जिस रंग की मिट्टी हो उसे प्रयोग कर सकते हैं।
3. मिट्टी मल–मूत्र, खाद, कीटनाशक आदि से प्रदूषित न हो।
4. ज़मीन के 3–4 फीट अंदर गहरी मिट्टी का प्रयोग करें।
5. यदि रोगी का शरीर ठंडक सहने योग्य न हो या अत्यधिक कमज़ोर हो तो ठंडी मिट्टी पट्टी न दें।
6. निमोनिया, दिल या दमे के दौरे में मिट्टी पट्टी न दें।
7. मलेरिया की चढ़ती अवस्था में जब रोगी को ठंड लग रही हो तो मिट्टी पट्टी न दें।
8. 30 से 45 मिट्टी तक मिट्टी पट्टी रखें। उसके बाद शरीर की गर्मी के कारण लाभ नहीं देती।
9. हैजा की हालत में बदल–बदल कर बार–बार मिट्टी पट्टी दें।
10. उपचार के समय पेट खाली हो।
11. उपचार के बाद एनिमा द्वारा कोष्ठ मल साफ कर लेना अच्छा है।
12. मिट्टी पट्टी पेट और पेडू दोनों के मध्य नाभि पर रखते हैं।

मिट्टी (पृथ्वी) की समीपता का लाभ

पशु–पक्षी अपनी थकान मिटाने हेतु ज़मीन पर लोट–पोट हो कर ताजगी प्राप्त कर लेते हैं। तीर्थ यात्रा, परिक्रमा, देवदर्शन के लिए नंगे पैर चलने का विधान वैज्ञानिक है। तपस्वी भूमि पर शयन व साधना करते हैं जिससे पृथ्वी की पोषक शक्ति प्राप्त हो।

मिट्टी के मकानों में रहने वाले लोग अधिक स्वस्थ रहते हैं। एडोल्फ जस्ट लिखते हैं, ''वृक्ष में जो काम जड़ें करती हैं, हमारे शरीर में कुछ अंश तक वह काम हमारे पैर करते हैं। पैरों के द्वारा पृथ्वी हमारे अंदर शक्ति और जीवन का संचार करती है। ईसा नंगे पाँव चलने को बहुत महत्व देते थे। ईसा स्वयं नंगे पाँव चलते थे तथा शिष्यों को भी कहते थे, ''तू जूतों का बोझ मत घसीट।''

यदि मिट्टी का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाए तो उसमें उसमें अनेक प्रकार के क्षार, लवण, खनिज, विटामिन, धातु, रसायन एवं रत्न आदि मिलेंगे। औषधियों के परमाणु तत्व भी मिट्टी में ही होते हैं। यह मनुष्य का दुर्भाग्य ही है कि वह ऐसी अमूल्य वस्तु को सस्ती चीज़ होने के कारण उपेक्षा की दृष्टि से देखता है।

Sunshine Vitamin: Vitamin D

Dr. Kanika, {BHMS, PGDHHM, ADCGFC, BCCY, M.A (PSYCHO), NDDY} 9915381628

'It is scorching hot'. 'I will get tan'. 'I need sunbathing'. 'Use SF-16 cream when you go outside'. These are some phrases used now and then. But sun is essential part of human life. It is required by healthy body to grow and nourish. But in modern era, we don't bother whether we are able to expose our body to proper amount of sunlight or not.

Many diseases are cured if we are exposed to right amount of sunlight. As our body requires Vitamin D. It is essential fat-soluble vitamin. It helps in proper immune function. It plays an important role in mood swing, autoimmune disease, obesity and some chronic diseases. Vitamin D is essential for strong bones to absorb calcium from the diet. Deficiency of Vitamin D causes rickets, which is a bone tissue disease. Due to rickets proper Calcium absorption does not occur which leads to softening of bones and sketal deformities. But, researches also reveal that Vitamin D helps the body to fight against many diseases as it improves immunity of the body.

Health Risk due to Vitamin D deficiency

- Symptoms like bone pain, muscle weakness may indicate deficiency of vitamin D. However sometimes it is difficult to diagnose only on the basis of symptoms. As these symptoms may be referred symptoms of some other diseases.
- Low blood level is also be associated with it.
- There are chances of death due to cardiovascular disease
- Cognitive impairment in older adults
- Asthma in children
- Cancer

Causes of Vitamin D Deficiency

Strict Vegetarian Diet : For assimilation of Vitamin D the most natural source is animal fat as it is a fat soluble vitamin. It includes fish, fish oil, egg yolk, fortified milk.

Lifestyle : When body is exposed to sunlight it produces Vitamin D. But avoiding sun totally due to sedentary lifestyle, occupation, wearing long robes or head covering may prevent exposure to sun.

Decreased efficiency of kidney : Your kidneys are not able to convert Vitamin D into its active form may result in Vitamin D deficiency.

Poor Digestion : Due to certain medical conditions such as Crohn's disease, Cystic fibrosis and Celiac disease absorption of vitamin D does not occur.

Obesity : Due to obesity vitamin D is not properly absorbed in the body as fat cells absorb the vitamin but it is not extracted in the blood which hinders the circulation of vitamin.

Treatment of Vitamin D deficiency

As vitamin D deficiency is becoming one of the most fast epidemic disease across the world. It is important to curb the disease in two simple ways . Firstly taking proper diet rich in Vitamin D and supplements'. Secondly taking early morning sunbath or late evening sunbath.

Lecorrhoea

Dr. Pooja

Lecorrhoea or **"Shwetpradra"** a Sanskrit word which means 'White Discharge' is a condition in which a whitish fluid is discharged from the genitals of a woman. There is a difference between the regular discharge and leucorrhoea. In order to maintain a healthy vagina and flush out harmful microorganisms from the vagina the body discharges a pale white and odorless fluid. But when there is an infection in the vagina, the discharge takes on a different form and is become sticky, thick or foul smell then it is called leucorrhoea.

Types of Leucorrhoea:

There are two types of leucorrhea.

1. Physiologic Leucorrhoea
2. Pathologic Leucorrhoea

Physiologic Leucorhoea : This type of leucorrhoea is taken as a normal as the discharge can be due to a change in one's hormonal levels. Usually it is seen in the early stages of pregnancy, state of sexual excitement and a sign of puberty for young girls.

Pathologic Leucorrhoea : In this type of the discharge color can be yellow, brown or frothy and have a foul smell. It could be caused due to Cervicitis, Vaginal yeast infection, Trichomonal Vaginitis, Systemic illness like Anemia, T.B. etc. and Personal unhygiene.

Symptoms : General symptoms includes excessive discharge, itchiness in genitals, pain in lower back, thighs and calf muscles, foul smell, burning micturition etc.

Treatments:

Naturopathic treatment:

1. Cleansing of bowels by luke warm neem water enema.
2. Cold hip bath for 15-20 minutes daily twice a day.
3. Sitz bath before going to sleep at night for 15 minutes.
4. General detoxification by steam bath once a week, hot foot bath, sun bath and other treatments according to cause of problem should be done.

Preventions : This is a disease that can easily be prevented by ensuring that certain changes are brought about in your lifestyle like-

1. Maintaining personal hygiene.
2. Healthy nutrition-rich diet must be included.
3. Avoid spicy, fried, junk food, confectionary items, preserved and canned food, pickles, sauces, alcohol, smoking, etc.
4. Drink plenty of fresh water to flush out all foreign matter from body.
5. There must be a balance of exercise and rest in the daily lifestyle.

पंजाब के प्रथम मुख्यमंत्री भार्गव को याद किया गया

आजादी के बाद महापंजाब के प्रथम मुख्यमंत्री एंव उत्तर भारत के गांधी के रूप मे पहचाने जाने वाले डाक्टर गोपीचन्द भार्गव की पुण्यतिथि पर उन्हें दिनांक 26.12.2019 को गांधी स्मारक भवन, सैक्टर–16 चण्डीगढ़ के सभागार में समारोह कर याद किया गया। गांधी स्मारक निधि के अध्यक्ष के.के. शारदा ने उन्हें याद करते हुए कहा कि भार्गव जी का स्वतन्त्रता आंदोलन एवं खादी जगत को लोकप्रिय बनाने में बहुत योगदान रहा। आज भी तीनो राज्यों की खादी की संस्थायें उन्हीं की देन हैं। वे पंजाब खादी बोर्ड के अध्यक्ष भी रहे। खादी बोर्ड के प्रागंण में काम करते हुए ही इन्होंने अन्तिम सांस ली। युवा पीढ़ी को ऐसे महापुरूषों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

डा. प्रज्ञा शारदा के कहानी संग्रह 'अगले मोड़ पर' का हुआ विमोचन

आचार्यकुल चण्डीगढ़ (रजि.) एवं संवाद साहित्य मंच के सौजन्य से 20.10.19 को गांधी स्मारक भवन सैक्टर 16 के सभागार में कहानीकार डा. प्रज्ञा शारदा के नवीनतम कहानी संग्रह अगले मोड़ पर का विमोचन व चर्चा का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर दिल्ली से पधारे वरिष्ठ साहित्यकार डा. नरेन्द्र मोहन ने मंच की शोभा बढ़ाई तो अध्यक्षता एस. के. बातिश, एम. डी, सहकारिता विभाग चण्डीगढ़ ने की। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर वरिष्ठ साहित्यकार प्रेम विज एवं केदार नाथ केदार ने शिरकत की। मंच संचालन चरित्र अभिनेत्री एवं कवयित्री डा. उर्मिला कौशिक सखी ने किया।

कार्यक्रम के आरम्भ में सोमेश ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। तत्पश्चात मंचासीन महानुभावों द्वारा डा.प्रज्ञा शारदा के नवीनतम कहानी संग्रह अगले मोड़ पर का लोकार्पण किया गया। लोकार्पित कहानी संग्रह पर अपने विचार प्रकट करते हुए आलोचक प्रेम विज ने कहा कि इन कहानियों में घर परिवार व समाज की व्यथा का चित्रण हुआ है। डा. सुशील हसरत नरेलवी ने कहा कि प्रज्ञा शारदा के कहानी संग्रह की कहानियाँ रिश्तों के मर्म को खुलासा कर, संवेदनात्मकता की परतें खोलती हुई मार्मिक पहलुओं पर पाठक की नजर टिका देती है। दीपक चनारथल ने इन कहानियों को सहजभाव की प्रवृति से ओतप्रोत बताया।

इसके अतिरिक्त डा.प्रज्ञा शारदा के नवीनतम कहानी संग्रह पर साहित्यकार केदारनाथ केदार, एस.के. वातिश ने भी अपने उद्गार व्यक्त किये।

मुख्य अतिथि महोदय डा.नरेन्द्र मोहन ने इन कहानियों को सामाजिक परिवेश के ताने बाने से लेकर पारिवारिक रिश्तों के उतार चढ़ाव का आईना बताया और कहानीकार को आगे लिखने के लिए प्रेरित किया।

गांधी स्मारक निधि के अध्यक्ष के.के.शारदा ने सभी साहित्यकार एवं गणमान्य अतिथियों का धन्यवाद किया।

शहीद-ए-आज़म भगत सिंह की 112वीं जयन्ती मनाई

शहीद–ए–आज़म सरदार भगत सिंह जी की 112वीं जयंती के अवसर पर 28/09/2019 को गांधी स्मारक भवन सैक्टर 16 के सभागार में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि पंजाब विधान सभा के

स्पीकर राणा के. पी. सिंह, विशिष्ट अतिथि भगत सिंह के भतीजे किरण जीत सिंह ने प्रोग्राम में शिरकत की। अध्यक्षता गांधी स्मारक निधि के अध्यक्ष के.के. शारदा ने की व मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रसिद्ध इतिहासकार एम.एम. जुनेजा जी ने कहा कि भगत सिंह को जब फाँसी देने के लिए ले जाया जा रहा था तो भगत सिंह के चेहरे पर हंसी थी और ले जाने वाले लोग रो रहे थे।

राणा के. पी. सिंह ने कहा कि भगत सिंह एक साधारण क्रांतिकारी नहीं थे वे एक सुपर क्रांतिकारी थे भगत सिंह ने भारतीय संस्कृति को सही मायनो में समझा है। उन्होंने कहा कि भगत सिंह की राजनीतिक सोच पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। इसके लिए भगत सिंह पर

चेयर स्थापित की जाने की जरूरत है। के.के. शारदा ने कहा कि भगत सिंह की लोकप्रियता इतनी थी कि जब उनकी अस्थियों को लाहौर से लाया गया तो करीब एक

लाख लोग वहाँ मौजूद थे। डॉ. देवराज त्यागी ने कार्यक्रम के आरम्भ में अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन दीपक चनारथल ने किया। इस अवसर पर प्रसिद्ध गायकों द्वारा देश भक्ति के गीत प्रस्तुत किए गए।

गांधी जी की 150वीं जयन्ती मनाई

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150वीं जयन्ती (02.10.19) के शुभ अवसर गांधी स्मारक निधि सैक्टर 16 चण्डीगढ़ के द्वारा आयोजित भव्य समारोह में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए राज्यपाल पंजाब एवं प्रशासक चण्डीगढ़ वी. पी. सिंह बदनौर ने कहा कि जयंति समारोह के अर्न्तगत गांधी जी के जीवन और दर्शन पर कार्यक्रम पूरे वर्ष चलाये जायेंगें।

गांधी स्मारक भवन में सभागार की मांग पर जल्द ही अधिकारियों के साथ बैठक की जायेगी। ऐसे सभागार का होना गांधी स्मारक भवन के लिए जरूरी है।

राज्यपाल ने इस अवसर पर भवन की महात्मा गांधी जी को समर्पित स्मारिका का भी विमोचन किया। उनके साथ अध्यक्ष के.के. शारदा, सत्यपाल जैन, प्रेम विज, देवराज त्यागी, प्रज्ञा शारदा, एम.एम. जुनेजा, पापिया चक्रवर्ती भी उपस्थित थे। उन्होंने जलशक्ति कैम्पस एवं जलशक्ति ग्राम की पत्रिका का भी विमोचन किया।

अतिरिक्त सोलिसिटर जनरल सत्यपाल जैन ने कहा कि विगत चार–पाँच वर्षों से महात्मा गांधी पर बहुत काम हुआ। हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से स्व्च्छता अभियान की घोषणा और शुरूआत करना उनके सिद्धान्तों पर चलने की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है।

अध्यक्ष के.के. शारदा ने कहा कि प्रधानमंत्री के स्वच्छता और प्लास्टिक फ्री कार्यक्रम को गांधी स्मारक निधि द्वारा जन–जन तक पहुंचाया जायेगा। उन्होंने भवन सभागार के निर्माण तथा दूसरी सुविधाओं की आवश्यकता जाहिर की जिसे राज्यपाल ने सहर्ष स्वीकार कर लिया तथा पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर डा. प्रज्ञा शारदा को स्मारिका के संकलन तथा पापिया चक्रवर्ती को विशेष सहयोग के लिए सम्मानित किया गया तथा साहित्यकार व समाजसेवी अशोक नादिर को भी सम्मानित किया गया। ब्लू वर्ल्ड पब्लिक स्कूल के बच्चों ने महात्मा गांधी का प्रिय भजन व जीवन दर्शन को दर्शाती नाटिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन पुनीता बावा ने किया।

पानीपत की छात्रा वेदैही ने स्वच्छ भारत पर कविता प्रस्तुत की जिसे बहुत सराहा गया। चण्डीगढ के विभिन्न स्कूलों से लगभग 400 बच्चों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया जिसमें शिक्षा विभाग के विक्रम राणा का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर भारी संख्या में साहित्यकार, बुद्धिजीवी एवम् प्रशासकीय अधिकारी आदि उपस्थित थे।

सांस्कृतिक विभाग चण्डीगढ़ एवं सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया का भी इस कार्यक्रम के आयोजन में विशेष सहयोग रहा।

गांधी स्मारक निधि के संस्थापक त्रिखा जी का स्मृति दिवस मनाया

गांधी स्मारक निधि पंजाब, हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश, स्वाध्याय आश्रम पट्टीकल्याणा के संस्थापक स्वतंत्रता सेनानी एवं गांधी विचारक स्व० पं० ओम प्रकाश त्रिखा जी की 35वीं पुण्यतिथि एवं माता लक्ष्मी देवी त्रिखा जी का स्मृति दिवस 10 नवम्बर 2019 को श्री राजबीर सिंह रावत जी की अध्यक्षता में श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर हवन यज्ञ, श्रद्धांजली सभा एवं दोपहर भोज का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में माननीय श्री संजय भाटिया जी, सांसद (करनाल) एवं विशिष्ट अतिथि श्री नरेन्द्र कुमार उपमन्यु जी (युवा इतिहासकार एवं हिन्दी साहित्य के वरिष्ठ सम्पादक) उपस्थित रहे। संस्था के सचिव श्री देवराज त्यागी ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए बताया कि पूज्य त्रिखा दम्पत्ति सच्चे अर्थों में गांधीवादी विचारक थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज सेवा में लगा दिया। पूज्य त्रिखा जी ने ना तो राजनीति का लाभ लिया और ना ही अपनी कुर्बानियों का कोई पुरस्कार लिया। उनके जीवन में राष्ट्रीय भावना कूट कूट कर भरी हुई थी।

महात्मा गांधी द्वारा निकाले जा रहे मासिक पत्र ''हरिजन'' उर्दू के वे सम्पादक रहे। उन्होने गांधी विचार पर 23 पुस्तकें लिखी तथा कई पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। माननीय श्री संजय भाटिया जी ने पूज्य त्रिखा दम्पत्ति को पुष्पांजली अर्पित कर कहा कि पूज्य त्रिखा जी के द्वारा चलाये जा रहे कार्यों की आज अधिक आवश्यकता है और उनके जीवन से हम बहुत कुछ सीख लेकर हमें जीवन में आगे बढ़ना चाहिये और अपने समाज के विकास के लिये उनके विचारों का प्रचार प्रसार करना चाहिये। श्री संजय भाटिया ने बताया कि उन्होनें गांव पट्टीकल्याणा को गोद लिया है इसलिये उनका कर्तव्य बनता है कि इस आश्रम की गतिविधियों का विस्तार कर आश्रम का अधिक से अधिक विकास करायेंगे। श्री नरेन्द्र कुमार उपमन्यु जी ने बताया कि आप उच्चकोटि के लेखक और शायर रहे हैं आपने आजादी के आन्दोलन में भी पूरी सक्रियता से अपनी भूमिका निभाई और समाज को पट्टीकल्याणा स्वाध्याय आश्रम के रुप में एक सेवा और विचारों से ओत प्रोत संस्था बनाई जो सदैव उनके विचारों का जीवन दर्शन कराती रहेगी। अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में श्री राजबीर सिंह रावत जी ने कहा कि हमें पूज्य पण्डित जी के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन में आगे बढ़ना चाहिये। डा० स्वतंत्र जैन जी ने कहा कि उनके द्वारा स्थापित किये गये आदर्शों को अपने जीवन में धारण कर समाजपयोगी कार्यों को अपनी यथाशक्ति से करना चाहिये। इस अवसर पर आश्रम वासी एवं आस पास के गांवों के प्रबुद्ध जन उपस्थित रहे।

इस अवसर पर सभी लोगों ने प्रसिद्ध गांधीवादी श्री महावीर त्यागी जी के देहावसान पर दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजली अर्पित की गई।

प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग केन्द्र का वार्षिक समारोह

गांधी स्मारक भवन, सैक्टर 16–ए, चण्डीगढ़ में प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग केन्द्र के छात्र–छात्राओं ने वार्षिक समारोह 08–12–2019 को रंगारंग कार्यक्रम के साथ मनाया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर सिटको के डायरेक्टर राकेश कुमार पोपली, विशिष्ट अतिथि के तौर पर नसीब सिंह मन्हास, डायरेक्टर दूरदर्शन उपस्थित थे। डॉ. सुभाष गोयल, समाजसेवी ने भी भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता के.के. शारदा, अध्यक्ष, गांधी स्मारक निधि ने की।

समारोह का आरंभ नीतू शर्मा के स्वागत गीत से हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम में मुकेश अग्रवाल ने गीत प्रस्तुत किए। आर.डी. केले 'कुछ दूर हमारे साथ चलो' और डॉ. एम.पी. डोगरा ने 'होठों से छू लो तुम' गज़ल, डॉ. मन्हास ने डोगरी भाषा में गीत गाया। सीमा गर्ग ने घूमर डांस किया।

दिसंबर 2019 वर्ष के प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग के डिप्लोमे में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर आए छात्र छात्राओं को सम्मानित किया गया। छात्र छात्राओं की ओर से डॉ. पूजा, डॉ. एम.पी. डोगरा और रमेश शर्मा को सम्मानित किया गया।

डॉ. राकेश कुमार पोपली ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा में जो लोग कोर्स कर रहे हैं यह उनके खुद के स्वास्थ्य लाभ के लिए एवं दूसरे लोगों को स्वस्थ्य लाभ प्रदान करने के लिए उत्तम कार्य है। डॉ. देवराज त्यागी, सचिव गांधी स्मारक निधि ने सभी लोगों का धन्यवाद किया और निधि की गतिविधियों के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन प्रेरणा पंडित और कमला दीवान ने किया।

अंग्रेजी कविताओं की पुस्तक 'डोर्ज़ आरन्ट ऑलवेज़ ओपन' का विमोचन

आचार्यकुल चंडीगढ़ द्वारा अंग्रेजी कविताओं की पुस्तक 'डोर्ज़ आरन्ट ऑलवेज़ ओपन' के विमोचन का आयोजन गांधी स्मारक भवन चंडीगढ़ में दिनांक 15.12.19 को किया गया। लेखन के क्षेत्र में (मात्र 19 वर्षीय) युवा उभरता कलमकार दक्ष बावा जिसकी पहली पुस्तक का विमोचन 'डोर्ज़ आरन्ट ऑलवेज़ ओपन' का प्रांत के विख्यात लेखकों व शिक्षाविदों की उपस्थिति में हुआ।

मुख्य अतिथि के रूप श्री विवेक अत्रे (रिटायर्ड आई. ए. एस), विशिष्ट अतिथि के तौर पर श्री वी.के.कपूर, श्रीमती मंजू जाडका, श्री केदारनाथ, श्री चंद्र त्रिखा, श्री एम.एम. जुनेजा अपना आशीष देने पहुँचे।

श्रीमती तरूणा शर्मा, बलबीर तन्हा जी ने जहाँ एक ओर दक्ष की कविताओं की सुंदर विवेचना की वहीं दूसरी ओर उसकी विद्यालय व कॉलेज की अध्यापिकाओं ने उसके जीवन और जिज्ञासू प्रवृति पर प्रकाश डालते हुए अग्रिम शुभकामनाओं द्वारा अपना आर्शीवाद दिया।

अपने दादा जी श्री हरकृष्ण सिंह बावा एवं स्वर्गीय दादी की प्रेरणा को चरित्रार्थ करते हुए दक्ष बावा ने सभी से 2 मिनट की प्रार्थना का आग्रह भी किया।

60 कविताओं की इस पुस्तक को साकार रूप तक पहुँचाने के लिए दक्ष ने आदरणीय श्री कैलाश आहलूवालिया जी का विशेष धन्यवाद किया।

आचार्यकुल के चेयरमैन आदरणीय श्री के.के.शारदा जी के स्वागत भाषण से कार्यक्रम आरंभ हुआ और गांधी स्मारक निधि के डायरेक्टर श्री देवराज त्यागी जी एवं प्रेम विज के सहयोग और मार्गदर्शन से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

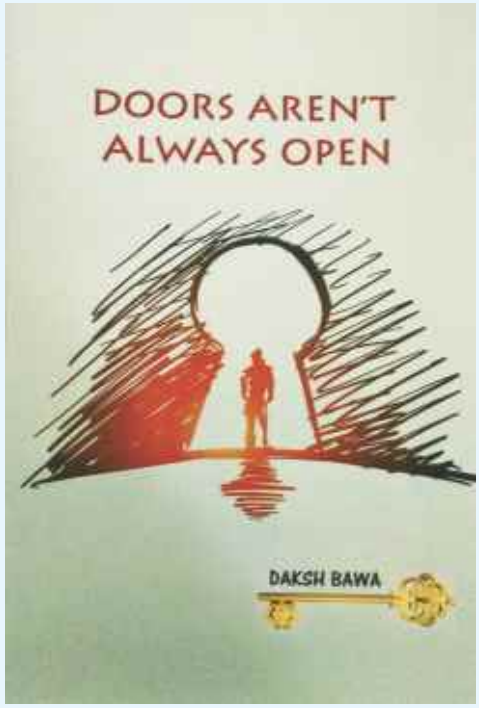

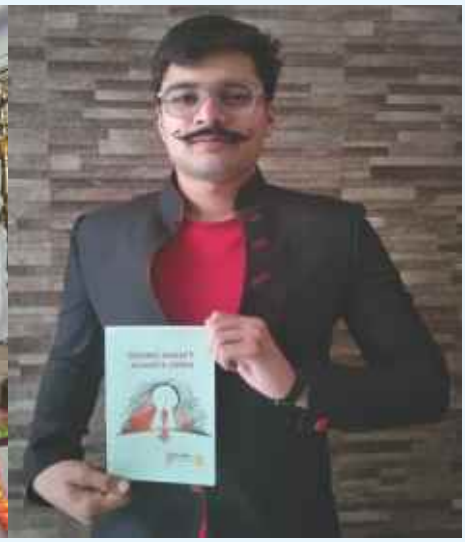

सर्वोदय भवन हिसार में 21वीं सदी में भारत को सम्पूर्ण क्रान्ति की आवश्यकता विषय पर गोष्ठी

हिसार, 17 नवंबर 2019 को भारत को आजाद हुए 72 वर्ष पूरे हो चुके हैं, परन्तु आम आदमी की मूलभूत समस्याएँ ज्यों–की–त्यों हैं। आजादी के बाद शहरों में तो कुछ विकास हुआ है, लेकिन पूरे देश में गाँव की हालत बदत्तर ही हैं। आज भारत की कुल जनसंख्या 130 करोड़ में से 85 करोड़ जनसंख्या युवाओं की है, परन्तु कोई अच्छा नेतृत्व न मिलने के कारण युवा शक्ति दिशाहीन है और बेरोजगारी का दंश झेलते हुए नशाखोरी, ड्रग्स जैसी भंयकर बुराई के गर्त में डूबती जा रही है।

उपरोक्त विचार संपूर्ण क्रांति के जनक लोकनायक जयप्रकाश नारायण को याद करते हुए पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट के एडवोकेट अरूण जौहर ने सर्वोदय भवन हिसार की रविवारीय गोष्ठी में 21वीं सदी में भारत को संपूर्ण क्रांति की आवश्यकता विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। गोष्ठी की शुरूआत सर्वोदय भवन हिसार के निदेशक धर्मवीर शर्मा ने सर्वधर्म प्रार्थना से की। गोष्ठी की अध्यक्षता हिसार के वयोवृद्ध डॉ. इन्द्रजीत ने की जो सन 1967 में एमबीबीएस की डिग्री लेने के बाद हिसार इलाके की जनता को अपनी सेवाएँ दे रहे हैं और सभी सामाजिक गतिविधियों में बढ़ चढ़ कर भाग लेते हैं। जौहर ने कहा कि देश में 72 साल की आजादी के बाद भी सरकारें पीने का शुद्ध पानी भी उपलब्ध नहीं करा सकी जोकि जीवन की मूलभूत आवश्यकता है।

दिन प्रतिदिन देश में गरीबों की संख्या निरन्तर बढ़ती गई और सत्ताधारियों ने गरीब मजदूर किसान को ऋण सुविधा उपलब्ध कराने के बजाए अपना ध्यान बड़े–बड़े उद्योगपतियों के बैंक लोन माफ करने में लगाए रखा। वर्तमान में भी भारत के धनाढ्य उद्योगों के लगभग 1 लाख करोड़ रूपए के बैंक के कर्जे तो माफ कर दिए, लेकिन 6 हजार करोड़ रूपए के गरीब किसानों के कर्जे माफ करने हेतु सरकार हिचकिचा रही है जिसके परिणामस्वरूप गत 5 वर्षों में लगभग पचास हज़ार किसान पूरे देश में आत्महत्या कर चुके हैं। जौहर ने कहा कि यदि सरकारें आम गरीब मजदूर किसान और युवाओं के हित में कोई निर्णय नहीं ले रही है तो भारत के 80 करोड़ युवाओं को भी कुछ अपने हाथ पैर हिलाने चाहिए और 5 जून 1975 को लोकनायक जयप्रकाश नारायण को कॉलेज और यूनिवर्सिटी के छात्रों को एक वर्ष तक अपनी क्लासों का बहिष्कार करने की तर्ज पर अपना भविष्य उज्जवल करने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज यह समय की मांग है कि देश में संपूर्ण क्रांति के दूसरे चरण का आगाज़ होना ही चाहिए।

बतौर सभा के अध्यक्ष डॉ. इन्द्रजीत, प्रधान इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ने संपूर्ण क्रांति की आवश्यकता पर बोलते हुए कहा कि लोकनायक जयप्रकाश नारायण की क्रांति का मतलब तोड़–फोड़ से नहीं हैं, ब्लकि उनकी सम्पूर्ण क्रांति का मतलब है जन–जन का निहाल हो जाना और यह तभी संभव होगा जब हम सब उनके विचार को जन–जन तक पहुंचाएँ और फिर लोग अपने हक को सही तरीके से सही समय पर लें सकें।

युवा अवस्था में जो समाज की चिन्ता करता है, बुढ़ापे में उसकी चिंता समाज करता है। अपरिग्रह करने वालों की बुद्धि बुढ़ापे में तेज होती है। ऐसे ज्ञानवृद्ध शरीर–श्रम नहीं कर सकते, परन्तु बुद्धि से बहुत काम करते हैं।

आचार्य विनोबा

यादों के झरोखे से : त्रिखा दम्पत्ति

अवधेश कुमार, सरस बहन
प्रसिद्ध गांधी विचारक

परम आदरणीय त्रिखा जी, स्वमेव पितृवत् स्नेह की प्रतिमूर्ति थे। जिस प्रकार बालक की नकारात्मकता को भी पिता स्निग्धता पूर्वक सकारात्मक दिशा देता है, उसी प्रकार पंडित जी का पितृवत् स्नेह हम सभी पर सदैव बरसता रहा है और इसी के फलस्वरूप वे हम लोगों के हृदय में 'पिताजी' के रूप में सदैव उपस्थित रहे।

उन्होंने पट्टीकल्याना में आश्रम की स्थापना तो 1957 में ही की, परन्तु इसका नामकरण पूज्य विनोबा जी द्वारा, 'स्वाध्याय आश्रम' के रूप में 1970 में हुआ। पंडित जी सदैव यहाँ की गतिविधियों से 'बाबा' को अवगत कराते रहते थे और निवेदन करते कि यह आपका ही आश्रम है, इसे आपके मार्गदर्शन की आवश्यकता है। अन्ततोगत्वा विनोबा जी ने कहा कि यहाँ 'स्वाध्याय की ऊर्जा रूपी तरंगे प्रस्फुटित हों, एवं यह 'स्वाध्याय आश्रम' के नाम से जाना जाय। 'स्वाध्याय' रूपी यज्ञ से उत्पन्न तरंगे जनमानस में सकारात्मक भावनाओं के अंकुर प्रस्फुटित करेंगी।

मुझे नाम तो ठीक से स्मरण नहीं है, परन्तु हमारे शास्त्रों के अनुसार एक ऋषि हुए हैं जो 13 वर्ष तक माँ की कोख में ही रहे। इसी प्रकार 'स्वाध्याय आश्रम' भी 13 वर्ष तक गर्भस्थ ही रहा, ऐसी मुझे प्रतीति है।

'स्वाध्याय' के अनेक आयाम हैं। उनके विस्तार में न जाते हुए, यदि हम इतना ही कर सकें कि हम जो प्रार्थना करते हैं, उनके बोलों पर, उनकी एक–दो लाईनों पर ही क्रम वार चिन्तन करने का प्रयास करते हुए उसे हृदयंगम करने का अभिक्रम करें। एक दिन में एक साथी बारी–बारी से प्रार्थना के उपरान्त, अपनी रूचि के अनुसार, 2–4 मिनट में अपना चिन्तन सांझा कर सकें तो उत्तम होगा। अन्यों को भी चिन्तन एवं हृदयंगम की दिशा एवं प्रेरणा मिल सकती है।

सन् 1946 की बात है, मुझे अपने बड़े भाई के साथ बम्बई जाने का अवसर मिला। उस समय, समुद्र तटीय, प्रसिद्ध मैरीन ड्राईव, पर एक बड़ी सी चित्रावली के साथ होर्डिंग लगी थी, जो अभी भी मानस पटल पर पूरी तरह अंकित है। उसका आशय था, 'हर बड़े व्यक्तित्व के पीछे एक महिला का हाथ होता है।' यह उक्ति यहाँ शतप्रतिशत प्रतिबिम्बित होती है। 'माता लक्ष्मी देवी त्रिखा' के बिना 'पं. ओमप्रकाश त्रिखा' की शख्सीयत अधूरी है। इसका मैं स्वयं प्रत्यक्ष अनुभव कर चुका हूँ। गांधी शताब्दी वर्ष की तैयारी के पृष्ठभूमि में 1968 में पंडित जी से पहली बार मेरा मिलना चण्डीगढ़ में हुआ। उस समय वे सैक्टर 16 में रहते थे। गांधी स्मारक भवन का निर्माण हो रहा था तथा स्वयं उन्होंने कोठी के गराज में अपना निवास बनाया हुआ था, और पूरी कोठी सार्वजनिक कार्यों के लिए रखी थी। माता जी ने स्वयं अपनी हाथों रोटियां सेंक कर, मुझ अजनबी बालक को वात्सल्य पूर्वक भोजन कराया, वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। उनका वह वात्सल्य भाव हर किसी के लिए उपलब्ध था, चाहे वो पट्टीकल्याणा हो, अथवा अन्य कोई स्थान।

बात लम्बी होती जा रही है, अतः क्षमा प्रार्थना के साथ, ईश्वर से यही प्रार्थना है कि 'पिता तुल्य' पं. ओम प्रकाश त्रिखा जी, एवं मातृ स्नेह से परिपूर्ण माता लक्ष्मी देवी त्रिखा जी के समान सकारात्मक सोच एवं रचनात्मक दृष्टि से हम सभी को पूरित करें। यही इन दोनों महान विभूतियों के प्रति विनम्र स्मरणाञ्जलि एवं श्रद्धांजलि है।

प्राकृतिक चिकित्सा दिवस की झलकियाँ

18.11.19 को गांधी स्मारक भवन, सैक्टर 16 ए, चण्डीगढ़ में प्राकृतिक चिकित्सा समिति, चण्डीगढ़ के तत्वाधान में प्राकृतिक चिकित्सा दिवस (नैचुरोपैथी डे) मनाया गया। प्रातः 6:30 बजे 'रन फॉर नैचुरोपैथी' का आयोजन सुखना लेक पर किया गया जिसमें लगभग 200 लोगों ने भाग लेकर प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति लोगों को जागरूक किया।

प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. एम. पी. डोगरा, अध्यक्ष प्राकृतिक चिकित्सा समिति, ने प्राकृतिक उपचार पर बोलते हुए कहा कि 90% - 95% रोग तो जीवनशैली में बिगाड़ की वजह से उत्पन्न हो रहे हैं। हम प्रकृति से जितना दूर जा रहे हैं उतना ही हम रोगों से घिरते जा रहे हैं। हम प्राकृतिक जीवन और संयमित जीवनशैली से इन रोगों से बच सकते हैं। प्राकृतिक चिकित्सा कहती है कि यदि हम प्रकृति के अनुसार चलें तो हम रोगी होंगे ही नहीं, एवं हमें दवाईयाँ लेने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। मौसमी फल एवं सब्जियों का सेवन करें, मोटे अनाज को अपने खान–पान में शामिल करें, भूख अनुसार टुकड़ों–टुकड़ों में खाएं, उचित मात्रा में पानी पीएं, जल्दी सोएं और जल्दी उठें एवं योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करें। ऐसा करके हम स्वस्थ एवं निरोगी काया पा सकते हैं।

के. के. शारदा, अध्यक्ष गांधी स्मारक निधि, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल एवं चण्डीगढ़ ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि स्वस्थ रहना प्रत्येक मनुष्य के हाथ में है अर्थात उसे प्रकृति से समन्वय रख कर अपनी जीवन शैली अपनानी चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी अस्पतालों में एक नैचुरोपैथी कैबिन बनाया जाना चाहिए जिसमें हम प्राकृतिक चिकित्सा से इलाज कर सकें एवं लोगों को जागरूक कर सकें कि कैसे प्राकृतिक चिकित्सा के द्वारा हम बिना दवाईयों के स्वस्थ रह सकते हैं।

डॉ. देवराज त्यागी, सचिव प्राकृतिक चिकित्सा समिति, चण्डीगढ़ ने बताया कि भवन में एक आउटडोर प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र पिछले 15 वर्षों से चल रहा है तथा हमारे प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. एम. पी. डोगरा एवं डॉ. पूजा द्वारा अब तक हज़ारों रोगी लाभ उठा चुके हैं। सरकार ने 18 नवम्बर को प्राकृतिक चिकित्सा दिवस घोषित किया है जो कि प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार–प्रसार की ओर एक सकारात्मक कदम है तथा साथ ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को यह सच्ची श्रद्धांजलि है। पूर्व केन्द्रीय मंत्री पवन कुमार बंसल एवं श्रीमती शशि बंसल ने भी 'रन फॉर नैचुरोपैथी' में भाग लिया।

महावीर त्यागी जी की शोक सभा

सर्वोदय जगत के अग्रणी कार्यकर्ता, विनम्र, मृदुभाषी एवं हमारे प्रेरणा स्रोत, हरिजन सेवक संघ के पूर्व सचिव एवं अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद के पूर्व महासचिव तथा विभिन्न गांधीवादी संस्थाओं से जुड़े श्री महावीर त्यागी (उम्र 90 वर्ष) के निधन पर संस्था की ओर से दो मिनट का मौन रखकर उनको श्रद्धांजलि दी गई तथा ईश्वर से प्रार्थना की गई कि भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे तथा परिवार को इस महान दुःख को सहने की शक्ति दे।

श्री महावीर त्यागी लगभग 65 वर्षों से महात्मा गांधी के जीवन दर्शन व सिद्धांतों से प्रेरित होकर उनके द्वारा चलाये गये रचनात्मक कार्यों के प्रचार प्रसार में सक्रियता से लगे रहे। आपने संत विनोबा भावे के भूदान आन्दोलन में पं. ओम प्रकाश त्रिखा, श्री भीम सेन सच्चर, बीबी अम्तुस्लाम, दादा गणेषी लाल, एवं श्री सत्य प्रकाश शर्मा के साथ मिलकर उत्तरी क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त आप सर्वोदय के कार्यक्रमों में निरन्तर भागीदारी एवं मार्गदर्शन करते रहे। सफाई विद्यालय, अहमदाबाद से प्रशिक्षण लेकर गांव गांव में सफाई शिविर चलाये तथा गांव के लोगों को सफाई रखने के लिये प्रेरित करते रहे। आप अपने अन्तिम समय तक गांधी–विनोबा के विचारों के प्रसार प्रसार में लगे रहे और हाथ कती खादी एवं स्वदेशी वस्तुओं का ही प्रयोग किया।

श्री महावीर त्यागी जी के जाने से समाज एवं गांधी संस्थाओं की अपूर्णीय क्षति है जिसकी पूर्ति सम्भव नहीं है।

हरिजन सेवा, खादी उनके मनपसंद विषय थे और इन्हीं कार्यों के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित किया था। प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति उनका विशेष आग्रह रहता था। जीवन पर्यन्त उन्होंने अपने परिवार, मित्रों को इस पद्धति को अपनाने की प्रेरणा दी।

पूज्य संत विनोबा द्वारा स्थापित आचार्य कुल एवं शांति सेना संगठन को हरियाणा प्रदेश में खड़ा करने के लिए

आपके अभूतपूर्व सराहनीय प्रयास रहे। जिसके माध्यम से आपने अपने गुरू संत विनोबा के सत्य–प्रेम–करूणा के संदेश को युवाओं तक पहुँचाने का अद्भुत कार्य किया। गौरक्षा एवं उसका संवर्धन वे अपने जीवन का उद्देश्य मानते थे। संत विनोबा भावे ने अपने तमाम सहयोगी कार्यकर्ताओं को मुम्बई में चल रहे देवनार कत्लखाने के विरूद्ध गौरक्षा सत्याग्रह का आह्वान किया था। त्यागी जी विगत 38 वर्षों से पूरे प्रदेश में जनजागरण अभियान चलाकर वहां सत्याग्रही भेजते रहे। स्कूल और कॉलेजों में वह विद्यार्थियों के साथ निरन्तर संवाद स्थापित करते थे तथा उनको जीवन मूल्यों की समझ गांधी विचार, राष्ट्रप्रेम, क्रांतिकारियों की जीवन कथाएं आदि उनके बीच में सरल भाषा में रखते थे और रचनात्मक कार्यों की प्रेरणा देने के लिए उनके शिविर आयोजित करते थे जहां श्रमदान, वृक्षारोपण, पर्यावरण सुरक्षा, जल संरक्षण जैसे आवश्यक विषयों के प्रति उन्हें जागरूक कर उनसे क्रियान्वयन करवाते थे।

एक आदर्श माता-पिता

एक आदर्श माता –पिता
अपनी औलाद के लिए
सब कुछ करता है
कई बार बस अपना
ईमान छोड़
सब कुछ बेचने को तैयार
यहाँ तक कि अपने आप को भी
गिरवी रखने को हालात के हाथों मजबूर
ताकि
उनके बच्चे का भविष्य
और आने वाला कल
सुरक्षित सुनहरा व उज्जवल हो
बच्चों के हौसलों की उड़ान
कम न हो और वह
बुलन्दियां छू सकें
इस खातिर उन्हें चाहे अपने ही पंख
क्यों न काटने पड़ें
इतना होने के बाद भी
अगर कोई कमी रह गई
तो वो दोनों वक्यी ही
बेबस और लाचार .....
बेबस और लाचार ....
एक आदर्श माता–पिता .....

वीरेंद्र कौशल

दीपावली

आप सभी की .....
झोलियां सदा भरी रहें ....
खुशियां हमेशां बरसती रहें ....
बरकतें सदा बनी रहें ...
प्यार अंगसंग रहे ....
त्योहार सा मौसम रहे ....
गैर भी अपने रहें ....
पूरे सारे सपनें रहें ....
जुबान पर मिठ्ठास रहे....
ना अटकल न अटटहास रहे ...
न बनावटी क्यास रहें ....
आपस में भाईचारा रहे ...
सारा जहां हमारा रहे ....

वीरेन्द्र कौशल

"शिक्षक को आदर्श गुरू–मूर्ति बनने का प्रयत्न करना चाहिए। जिनका जन्म पहले हुआ है उनके जिम्मे बाद में पैदा होने वालों के लिए उदाहरण बन जाने का काम रहता है। बड़े भाई पर छोटे भाई को, गुरू पर शिष्य को अपनी कृति के द्वारा उदाहरण पेश करने की जिम्मेदारी है।

आचार्य विनोबा

KVS Agency

Publishers & Suppliers of Text / Note Books & All School Related Items

We have tie ups with all the major publishers and as such as fully equipped to supply the course material of any syllabus (CBSE, ICSE & STATE). Our commitment to excellence prompts us to never compromise either with the quality of the product or with the need to deliver on time, all the time.

Excellence is not the benchmark we strive for, at KVS AGENCY, excellence is the way of life and is imbibed in everything we do. In today's era of globalisation, education has become an indispensable part of our life and books without doubt are an integral part of Education. Therefore we put enormous impetus on the overall quanlity of the books and the matter contained in the books.

Few of our finest publications

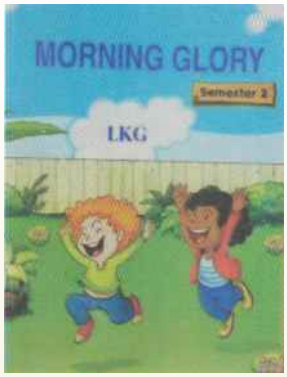

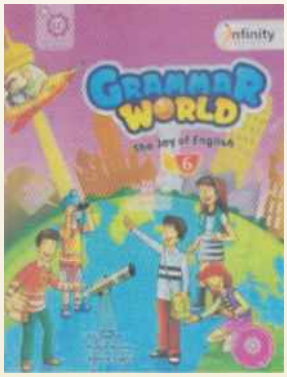

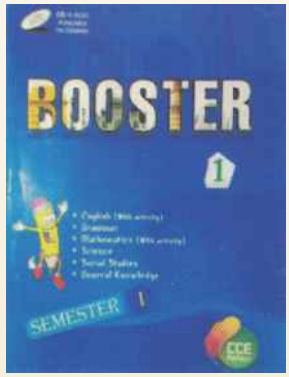

Our books come with CDs, Text Generators & Web Support

For any queries please feel free to contact us at :
9945048164, 9448674812, 9845665344, 9902505053
kvsagency14@gmail.com

118, 5th A Cross, 4th Main, Vidyagiri Layout, Nagarbhavi, Bangalore - 560 072
Branches : Hospet, Davanagere, Belagavi, Mysore & Udupi

With Best Compliments From :

JAI SAI RAM TEXTILES

Vikram Arora
+91-94160-33018

Manufacturers & Suppliers of :

All Types of Pillow, Cushion, Polyester Fibre Sheets

& Kinds of Fancy Bed Sheets, Comforter and Blanket Goods

Office & Godown : UJHA ROAD, NEAR SAI BABA MANDIR, PANIPAT

With Best Compliments From :

Yash Khurana
M. : 94160-07260

Daulat Textiles

Manufacturers & Suppliers of :
All Kinds of Curtain and Handloom Goods

Office & Godown : House No. 50, Scheme 19, Dev Puri Road, PANIPAT-132103

With Best Compliments From :

गांधी स्मारक निधि, पंजाब, हरियाणा व हिमाचल प्रदेश द्वारा संचालित केन्द्र

गांधी स्मारक भवन

सैक्टर 16-ए, चंडीगढ़ फोन-0172 2770976, 9478522333

- पुस्तकालय एवं वाचनालय, गांधी संग्रहालय
- सभा सम्मेलन / शिविर
- साहित्य एवं ग्रामोद्योग बिक्री केन्द्र,
- प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग केन्द्र
- प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग (NDDY) का डिपलोमा

प्राकृतिक जीवन केन्द्र

स्वाध्याय आश्रम, पट्टीकल्याणा, समालखा, जिला - पानीपत (हरियाणा)

दूरभाष :- 0180 2569133, 2569134, मो:- 9050026657

ईमेल: contact@gandhismaraknidhi.org वेबसाईट: www.gandhismaraknidhi.org

जीवन से निराश रोगियों के लिए आशादीप रोगों एवं दवाओं से मुक्ति का द्वार प्राकृतिक जीवन केन्द्र भारत वर्ष में प्रसिद्ध, महात्मा गांधी एवं विनोबा के विचारों पर आधारित एक ऐसा प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र है जहाँ पाँच आधारभूत तत्वों की सहायता से लगभग सभी प्रकार के रोगों की चिकित्सा की जाती है। यह 100 बैड का इन्डोर चिकित्सालय है।

प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग केन्द्र

सर्वोदय भवन, सरकुलर रोड, निकट शीतला मंदिर, जालन्धर शहर, मो. 9464680480

प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग केन्द्र

सर्वोदय भवन, पुरानी अनाजमंडी रोड, हिसार, मो. 9466204480

गांधी घर डेराबस्सी

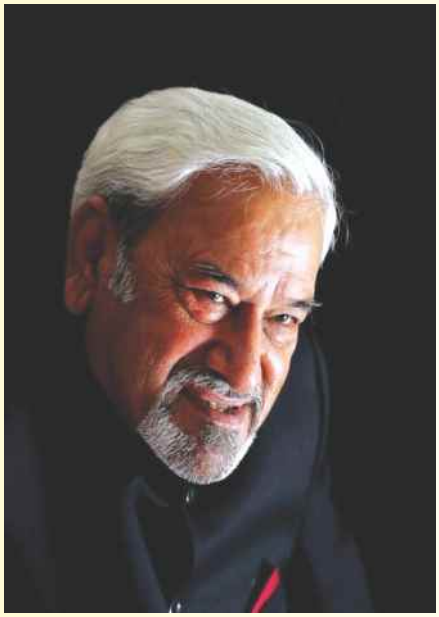

पार ब्रह्म आसरा

असहाय बुज़ुर्गों के लिए स्थायी घर

गांव तोगांपुर, नज़दीक दप्पर, ज़िला मोहाली, पंजाब
सम्पर्क करें : अशोक भण्डारी 'नादिर' : 98140–16596

!! SAT JINDA KALYANA !!

With Best Compliments From :

GSTIN : 06AXNPT2422M1Z1

(M) 98126-97831
(M) 72061-02615

RAHUL TANEJA
PROP.

M/s SHREE GANESH HANDLOOM

DEALS IN ALL TYPES OF COTTON YARN

Shed No. 13, Saraswati Welfare Society, Rishi Colony, Swatika Road, Panipat
Email : rahultaneja12@gmail.com

!! SAT JINDA KALYANA !!

With Best Compliments From :

GSTIN : 06AAGPT7197K1ZX

(M) 94166-00555
(M) 87081-87178

JAGDISH TANEJA
PROP.

M/s BINNY TEXTILES

SUPPLIERS OF ALL KINDS OF HANDLOOM PRODUCTS

SHED NO. 3, SWASTIKA ROAD, BEHIND ICICI BANK, PANIPAT-132103

!! SAT JINDA KALYANA !!

With Best Compliments From :

GSTIN : 06AFGPT8154F1Z7

(M) 90348-79155
(M) 70151-08799

AMIT TANEJA
PROP.

M/s RAHUL TEXTILES

MANUFACTURES OF ALL KINDS OF HANDLOOM GOODS

SHED NO. 3, SWASTIKA ROAD, BEHIND ICICI BANK, PANIPAT-132103

With Best Compliments From :

K L Chugh

Ashok Narang

PANIPAT

With Best Compliments From :

Tilak Chugh
9896215715

Bharat Bhushan Nanda
9215248600

SATGURU YARNS

(The Trading Peoples)

Shop No. 16, Ganga Garden Gangapuri Road,
Panipat - 132103 (Haryana)
Email : satguruyarn@gmail.com

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

#Bapu 150

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी
के 150वें जन्मदिन पर

हार्दिक शुभकामनाये

अमित विज
विधायक पठानकोट

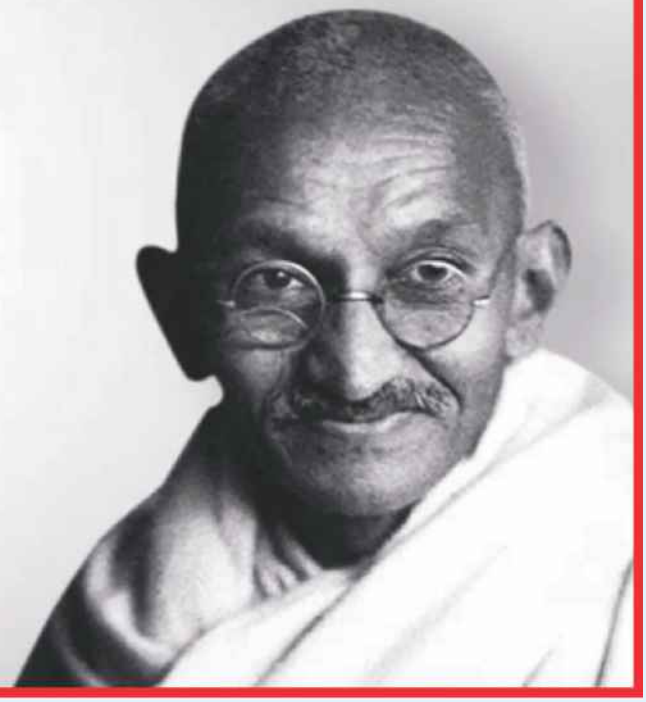

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के
150वें जन्मदिन पर

हार्दिक शुभकामनाये

THE MANAGEMENT,STAFF & STUDENTS OF

The Indian Heritage School

Bungal, Pathankot
(A Residential cum Day Boarding School)
WISHES ALL ITS PATRONS, PARENTS & WELL WISHERS

Contact us @ 01870-250117, 250180, 9888271336
E-mail:educationihs@gmail.com,
website:www.indianheritageschool.com

Vikram Joshi
Ser. Congress Leader
Secretary & P.P.C.C.

State Office, Punjab & U.T. Chandigarh

Khadi and Village Industries Commission
(Ministry of MSME, Govt. of India)

कामये दुखतप्तानाम्।
प्राणिनाम् आर्तिनाशनम्॥

सत्यमेव जयते

PRIME MINISTER'S EMPLOYMENT GENERATION PROGRAME (PMEGP)

For promotion of Rural Industrialization and Self Employment Generation in Punjab State and U.T. Chandigarh Ministry of M.S.M.E. (Govt. of India) has launched Prime Minister's Employment Generation Programme. Interested persons may apply online on PMEGP-E-Portal to establish their own manufacturing/service units, under the PMEGP scheme, a project of Rs. 10.00 lakhs in the service sector and Rs. 25.00 lakhs in the manufacturing sector can be set up in the urban and rural areas.

The beneficiaries of SC/STs, OBCs/Minorities, Women, Ex-Service men, Physically handicapped, NER, Hill and Border Areas are eligible for maximum 35% subsidy of project cost in rural area and 25% subsidy of the project cost in urban area. The male beneficiaries of general category are also eligible for maximum 25% subsidy of project cost in rural and 15% subsidy of project cost in urban area, under the Scheme, the male and female over 18 years of age are eligible. For the project cost above Rs. 10.00 lakhs in manufacturing sector and Rs. 5.00 lakhs in service sector the minimum education qualification is 8th class pass. The required documents for applying online are: Passport size photo, Proposal (Project)/ Educational qualification certificate , cast certificate (if applicable), Aadhar Card, Population Certificate. Detailed information can be obtained from official website www.kvic.org.in Apply online only on official website www.kvic.org.in under the Scheme. For more information contact District Industry Centre and Khadi & Village Industries Board at District level. No fees is taken from any beneficiary for application and there is no provision to submit any application to any office, so be careful with the intermediary. If any person says an official representative of the Scheme, inform us immediately to State Office, Khadi & Village Industries Commission, SCO No. 3003-04, Sector 22-0, Chandigarh-160022 (Phone No. 0172-2701261, 2702690, EmaiI.Sokvic.chd@rediffmail.com)

08/01/2020

State Director
Khadi & V.I. Commission
Chandigarh

गांधी स्मारक भवन में चल रही गतिविधियाँ

सैक्टर 16-ए, चण्डीगढ़। दूरभाष : 0172-2770976

1. पुस्तकालय एवं वाचनालय :

पुस्तकालय में लगभग 14000 पुस्तकें हैं जिनमें गांधी जी की लगभग 1700 पुस्तके हैं। इसके अतिरिक्त यहां पर योगा एवं नैचुरोपैथी की पुस्तकें भी उपलब्ध हैं। वाचनालय में आप अपनी पुस्तकें लाकर भी अध्ययन कर सकते हैं। यहां का वातावरण अत्यंत शांत एवं अध्ययन के अनुकूल है और लगभग 7. पाठक एक साथ बैठ कर पढ़ सकते हैं। प्रतिमाह लगभग 450 से 500 पाठक हमारे पुस्तकालय एवं वाचनालय का लाभ उठाते हैं।

पुस्तकालय में लगभग 17 दैनिक पत्र (हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी एवं उर्दू), 5 साप्ताहिक, 5 पाक्षिक, 23 मासिक, 5 द्वैमासिक एवं 11 त्रैमासिक पत्र–पत्रिकाएं नियमित रूप से आ रहे हैं।

2. प्राकृतिक चिकित्सा उपचार केन्द्र :

भवन में एक आउटडोर प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र अनुभवी चिकित्सकों के मार्ग दर्शन में चलाया जा रहा है। यह पंच महाभूतों द्वारा की जाने वाली चिकित्सा पद्धति है। प्राकृतिक चिकित्सा हमें बताती है कि किस प्रकार हम प्रकृति के नियमों को मानते हुए बिना दवाओं के स्वस्थ रह सकते हैं। यह चिकित्सा शरीर व मन दोनों को स्वस्थ करती है। प्राकृतिक चिकित्सा के साधक जल, धूप, मिट्टी, वायु, आसन, प्राणायाम, मालिश, उपवास, युक्त आहार की विधि कराई और बताई जाती है।

3. प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग (NDDY) का शिक्षण प्रशिक्षण केन्द्र :

प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से प्राकृतिक चिकित्सा की प्रमाणिक शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है। गांधी स्मारक प्राकृतिक चिकित्सा समिति राजघाट, नई दिल्ली के तत्वाधान में गांधी नैशनल एकेडमी ऑफ नैचुरोपैथी के द्वारा एन.डी.डी.वाई. का साढ़े तीन वर्षीय डिप्लोमा कोर्स की कक्षायें यहां आयोजित की जाती हैं। यह परीक्षा वर्ष में दो बार जून एवं दिसम्बर में होती है। इन परीक्षाओं के लिए प्रशिक्षित योग्य डॉक्टरों एवं अध्यापकों के द्वारा छात्र–छात्राओं के लिए हर रविवार को कक्षायें लगायी जाती हैं। परीक्षा में प्रवेश जनवरी से फरवरी एवं जुलाई से अगस्त में होता है तथा परीक्षायें जून व दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में आयोजित की जाती हैं।

4. योग केन्द्र :

प्रशिक्षित योग गुरू के मार्गदर्शन में गांधी स्मारक भवन में सुबह 5.30 से 6.30 बजे तक तथा सायंकालीन 5.30 से 6.30 बजे तक दो समय योग की कक्षायें लगाई जाती हैं। आस–पास के लोग स्वस्थ्य लाभ की दृष्टि से योग की कक्षाओं में भाग लेते हैं।

5. साहित्य एवं ग्रामोद्योग बिक्री केन्द्र :

केन्द्र पर प्राकृतिक चिकित्सा, स्वास्थ्य संबंधी, गांधी–विनोबा जी एवं सर्वोदय विचार की पुस्तकें काफी मात्रा में उपलब्ध रहती हैं। पुस्तकों के अलावा ग्रामोद्योग, प्राकृतिक चिकित्सा में आने वाले उपकरण, आयुर्वेदिक जूस आदि की बिक्री का भी प्रबन्ध है।

6. खादी हब :

चण्डीगढ़ के नागरिकों द्वारा खादी बिक्री भण्डार की मांग काफी लम्बे समय से चल रही थी। इसलिए भवन के प्रांगण में एक खादी हब बनाया गया है। जहां से उत्तम, शुद्ध ,खादी मिल सके। खादी के अलावा खादी हब में खादी ब्यूटी प्रोडक्ट, खादी आयुर्वेदिक हेल्थ प्रोडक्ट ग्रामोद्योग की अनेक वस्तुओं की बिक्री की जाती है।

शुगर रोगियों के लिए निःशुल्क आयुर्वेदिक दवाई दी जाती है तथा आंखों के रोगियों के लिए निःशुल्क आई ड्रॉप्स आंखों में डाली जाती है।

7. ए.टी.एम. :

लोगों की भारी मांग को देखते हुए परिसर में एक भारतीय स्टेट बैंक की ओर से ए.टी.एम. की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। जिसका स्थानीय लोग काफी लाभ उठा रहे हैं।

8. गांधी संग्रहालय, चण्डीगढ़ :

महात्मा गांधी को आने वाली पीढ़ी यादों में जिंदा रखे इसलिए यहाँ एक म्यूज़ियम का निर्माण कराया गया है। इस म्यूज़ियम में गांधी जी के जीवन से संबंधित कई चीज़ें रखी गई हैं जो कि कुछ इस प्रकार है :–

- गांधी जी के जीवन–दर्शन को दर्शाती हुई उनके जन्म से मृत्यु तक की लगभग 150 तस्वीरें।
- गांधी जी की जेल।
- दांडी यात्रा का मानचित्र (नक्शा)।
- अंग्रेजों के ज़माने का फोन जिसमें गांधी जी का अंग्रेज़ी व हिन्दी में भाषण सुना जा सकता है।
- उनके जीवन पर आधारित शॉर्ट फिल्म भी देखी जा सकती है।
- विश्व के लगभग 100 से अधिक राष्ट्रों ने गांधी जी की तस्वीर का डाक टिकट जारी किया हुआ है जिनमें से 35 यहाँ प्रदर्शित हैं।
- इसके अतिरिक्त यहाँ नमक बनाते हुए गांधी जी, उनका बिस्तर, खड़ाऊ, चश्मा, पॉकेट वॉच, पेटी चर्खा, लकड़ी के बर्तन, तीन बंदर आदि प्रदर्शित किए गए हैं।